हस्ताक्षर

आशीर्वाद

परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

रचियता

ऐलक श्री विज्ञानसागर

प्रकाशक

अतिशय क्षेत्र जय शांतिसागर निकेतन

ग्राम मंडौला, पुलिस चैक पोस्ट

जिला-गाजियाबाद (उ.प्र.) 201102

आशीर्वाद	: प.पू. आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज
कृति	: हस्ताक्षर
कृतिकार	: ऐलक विज्ञानसागर
प्रथम संस्करण	: सन् 2017 (1000)
उपलक्ष्य	: प.पू. आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज के 50वें जन्म दिवस के शुभ अवसर पर
प्रेरणा	: ब्र. केशर बाई जी
लेखन सहयोग	: ब्र. नन्दनी एवं ब्र. ऋजुता
मुद्रक	: वसुनन्दी ग्रॉफिक्स

प्राप्ति स्थान

वसुनन्दी साहित्य सदन

अतिशय क्षेत्र जय शांतिसागर निकेतन

ग्राम मंडौला, पुलिस चैक पोस्ट

जिला–गाजियाबाद (उ.प्र.) 201102

सम्पर्क सूत्र 09410494200, 09690042294

हस्ताक्षर

'हस्ताक्षर' एक ऐसी कृति है जो गुरुवर के छुए-अछुए पहलुओं को छूती है। हस्ताक्षर कृति गंगा की तरह अनवरत बहती हुई अपनी यात्रा पूर्ण करती हुई गंतव्य स्थान तक जाती है। हस्ताक्षर के बिना किसी भी कागज का कोई भी मूल्य नहीं है। गवर्नर के हस्ताक्षर से कागज मुद्रा (रुपया) बन जाता है, न्यायाधीश के हस्ताक्षर से मृत्यु और जीवन का निर्णय हो जाता है, टीचर व अध्यापक के हस्ताक्षर से सफलता या विफलता का निर्णय हो जाता है, हस्ताक्षर करने मात्र से बड़ी से बड़ी वस्तु मिल जाती है।

हस्ताक्षर का पर्यायवाची नाम है विश्वास, संबंध, अपनापन जो लिया भी जाता है और दिया भी जाता है। एक समय था जब लोग अंगूठा लगाते थे, अब समय बदला और हस्ताक्षर (सिग्नेचर) का समय आ गया है। हस्ताक्षर ही समय की माँग है। यह हस्ताक्षर कृति प.पू. आ. श्री वसुनंदी जी महाराज के स्वर्ण जयंती (50वें) जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में आ. श्री पर ही यह 50 रचनाएँ उनके श्री चरणों में समर्पण हैं। हम सदैव ही पूज्य गुरुदेव आ. श्री वसुनंदी जी महाराज के ऋणी हैं, जिन्होंने हमें मोक्षमार्ग पर लगाया है। इसी शृंखला में क्षु. निर्वाण नन्दनी माताजी की प्रेरणा ही हमें सतत् लेखन कला में प्रोत्साहन करती है, निर्वाणनन्दनी माताजी भले ही हमारे गृहस्थावस्था की माँ श्री थी मगर हमें यहाँ तक लाने में अर्थात् साधु जीवन में आने में उन्हीं की प्रेरणा थी। यह हस्ताक्षर कृति उन्हीं के कर-कमलों में श्रद्धा के साथ समर्पण है। इस कृति को लिखने में जो सहयोग दिया है, ऐसी ब्र. नन्दनी दीदी एवं ब्र. ऋजुता दीदी को गुरू की का आशीर्वाद देते हैं, अन्त में उन्हें भी गुरु जी का आशीर्वाद जिन्होंने इस कृति को प्रकाशन कराया है।

''जय शांतिसागर परिवार'' भी साधुवाद का पात्र है जो कि सदैव ही साधु-संतों की सेवा में तत्पर रहते हैं। साधनारत मुनि श्री नमिसागर जी महाराज एवं क्षु. अनन्तसागर जी महाराज भी हमारी साधना के बहुत बड़े सहयोगी हैं।

आपका अपना

ऐलक विज्ञान सागर

अतिशय क्षेत्र जय शांतिसागर निकेतन, मंडौला

अनुक्रमणिका

	हस्ताक्षर	७
१.	गागर में सागर	८
२.	अनुभूति के शिखर	१०
३.	मन की बात	१२
४.	छोटे-छोटे सुख	१४
५.	सुख के सागर	१६
६.	वसुन्धरा के वसुनन्दी जी	१८
७.	युग निर्माता वसुनन्दी जी	२०
८.	अनहत गूँज	२२
९.	इतिहास साक्षी है	२४
१०.	जिनवाणी पुत्र	२६
११.	महावीर के लघुनंदन	२८
१२.	अमृतमय जीवन है	३०
१३.	अध्यात्म शिरोमणि	३२
१४.	मृत्यु से मृत्युंजय तक	३४
१५.	पंक नहीं पंकज बनो	३६
१६.	जिनशासन जयवन्त रहे	३८
१७.	अहंकार या णमोकार	४०
१८.	गुरु देह परिचय	४२
१९.	गुरु आत्म परिचय	४४
२०.	गुरु उपाधि	४६
२१.	गुरु मन का मन्दिर है	४८
२२.	विद्यानंद के शिष्य कहाते	५०
२३.	आसमान के ध्रुव तारा	५२
२४.	जग में रहते जग से न्यारे	५४
२५.	अभिनन्दन गुरु का वंदन है	५६
२६.	गुरु लेखनी अमर रहेगी	५८

२७. चातुर्मास जहाँ करते हैं ६०
२८. गुरु के शिष्य महान हैं ६२
२९. गुरु वचन अमृत का प्याला ६४
३०. गुरु की शिष्या अलख जगाती ६६
३१. कमठ नहीं, कर्मठ ही बनना ६८
३२. गुरु परम्परा प्रीत जगाती ७०
३३. क्या कहते मेरे गुरुवर ७२
३४. बोल बड़े अनमोल जगत में ७४
३५. नमस्कार से चमत्कार ७६
३६. गुरुवर आप तो जादूगर हो ७८
३७. सबसे प्रिय मेरे गुरुवर ८०
३८. क्या कहती है देह आपकी ८२
३९. कृपा सिन्धु है मेरे गुरुवर ८४
४०. नजर आपकी नजराना है ८६
४१. गुरु आशीर्वाद ८८
४२. परम समाधि साधक हो ९०
४३. निष्कलंक चर्या को पाला ९२
४४. पूर्वाचार्यों में नाम लिखेगा ९४
४५. किनसे क्या पाया है ९६
४६. हम शिष्यों के आप मसीहा ९८
४७. गुरु पंछी है नील गगन के १००
४८. गुरु मोक्ष मार्ग के प्रहरी हैं १०२
४९. सौम्यता की प्रतिमूर्ति १०४
५०. अक्षर शिल्पी गुरु आप हो १०६

स्वर्णिम जन्म जयंती वर्ष
1967-2017

हस्ताक्षर

हस्ताक्षर में गुरु मिलेंगे
हस्ताक्षर में ज्ञान मिले।
हस्ताक्षर में संस्मरण है,
हस्ताक्षर में चमन खिले॥

हस्ताक्षर में जीवन बंगिया,
हस्ताक्षर में प्राण मिले।
हस्ताक्षर से बड़ा न कोई,
हस्ताक्षर सम्मान मिले॥

हस्ताक्षर है गुरुवर गाथा,
हस्ताक्षर है चातुर्मास।
हस्ताक्षर के कण-कण देखो,
हस्ताक्षर में गुरु निवास॥

हस्ताक्षर है पूर्ण समर्पण
हस्ताक्षर की बात बड़ी।
हस्ताक्षर के धुन के आगे,
हस्ताक्षर की बेल चढ़ी॥

हस्ताक्षर में सब कुछ मिलता,
हस्ताक्षर में वसुनन्दी।
हस्ताक्षर है विज्ञानसागर
हस्ताक्षर है आनन्दी॥

ऐलक विज्ञानसागर

भाद्रप्रद शु. 10 (सुगन्ध दशमी)
उत्तम संयम, वि.नि. 2543, वि.सं. 2074
श.सं. 1939, 31/8/2017 गुरुवार

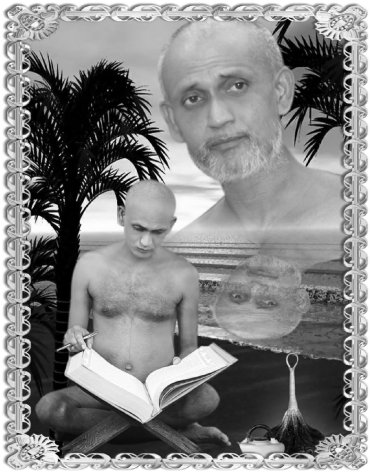

गागर में सागर

नव चिन्तन के गहरे सागर,
गागर में तुम सागर हो।
अतुल्य बल के धारी तुम हो,
संस्कृति के नागर हो॥

युग के आदि हुए आदिश्वर
जिनकी महिमा जग न्यारी है।
स्मृति पटल पर वर्धमान हैं,
जिनकी अहिंसा न्यारी है॥

वसुनन्दी ने वसुन्धरा पर,
अनुपम दीप जलाया है।
भूले भटके राही को भी,
सत् का सन्मार्ग दिखाया है॥

युगों-युगों से वसुन्धरा ये
नव निर्माण कराती है।
वसुन्धरा की पावन माटी,
चंदन तिलक लगाती है।।

मातृभूमि से बड़ा न कोई,
मातृभूमि पहिचान है।
अनुभव के सागर में खो जा,
अनुभव ही अरमान है।।

समय-समय पर इस अनुभव ने,
नव चेतन का काम किया।
जो जन्मा है पुण्य धरा पर,
उसने प्रकृति का सम्मान किया।।

आओ मानव सृष्टि देखे,
वसुन्धरा पर फूल खिले।
वसुनन्दी के समवशरण है,
देखो प्राणी गले मिले।।

मानवता को सूत्र बना दे,
मन की बंगिया खिली रहे।
चहुँ ओर सुख शांत होवे,
सज्जनता से बनी रहे।।

आदर करना संस्कृति का,
प्रकृति का सम्मान करो।
गागर में सागर को भर लो,
ऐसा कुछ तुम काम करो।।

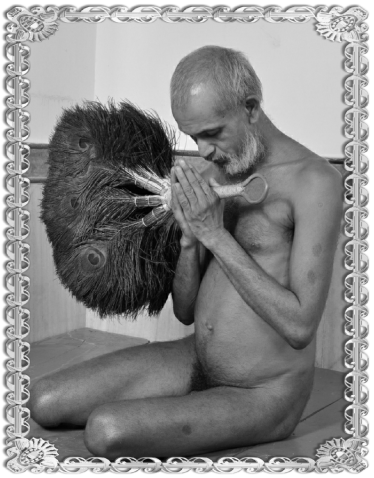

अनुभूति के शिखर

पीर पराई जो हरते हैं,
वे ज्ञानी गुणवन्त कहे।
जाति पाति से दूर रहे वह,
मानवता के भगवन्त बने।।

पर दुख में उपकार बने हैं,
अनुभूति के शिखर बने।
नहीं अभिमान तनिक भी छूता,
वे मानवता से निखर गाऐ।।

अनुभव के मोती बाँट रहे हो,
नई पीढ़ी को प्रोत्साहन बने।
युवा मनीषी जग उद्धारक,
मानो सीढ़ी का काम करें।।

समय-समय पर पतित जनों को
पावन मार्ग दिखाते हो।
विद्यानन्द का मार्ग पकड़कर
वसुनन्दी नाम बताते हो॥

पूर्व दिशा के नभ सूरज हो,
और रात्रि चाँद बने।
ध्रुव तारा है नील गगन के,
प्राणी मात्र को चमन बने॥

अनुभव से अनुभूति पायी,
ऐसा युग में काम किया।
बिखर रही मानवता को
फिर धरती पर स्थान दिया॥

कण-कण में भगवान बसे हैं,
श्रद्धा की एक जरूरत है।
नजर उठाओ आसमान पर,
बोलो कौन सा मूहूरत है॥

कर्म कर्म का दाता है,
फल की इच्छा बेकार है।
कर्म किए जा फल मत सोचो,
जो सोचा भव से पार है॥

शुभचिन्तक है पग-पग तेरे,
मत यादों में ढूँढ़ों तुम।
अनुभूति के शिखर बनो तुम,
खुद को खुद में ढूँढ़ों तुम॥

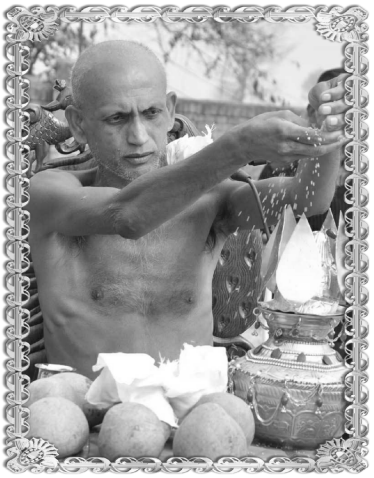

मन की बात

मन पाती पर ये लिख देना
गुरु की अगर कहानी है।
तब तक गाथा लिखी रहेगी,
जब तक गंगा में पानी है॥

जब तक सूरज चाँद रहेगा
तब तक गुरुवर का नाम रहेगा।
इतिहास स्वयं इतिहास बनेगा,
ऐसा गुरु सम्मान रहेगा॥

तन की बातें बहुत हुई हैं,
अब मन की बातें करना है।
चलो गुरु की चरण-शरण में,
जो पावन मुक्ति का झरना है॥

जो ज्ञान का सागर, बना हिमालय,
उसकी अपनी कोई पहिचान नहीं।
जो युगों-युगों से बना तपस्वी,
मानो धरती पर इन्सान नहीं।।

बहुत आयामी बने हैं गुरुवर,
बहुत व्यक्तित्व के धनी बनें।
शुभ चिन्तक है नाम तुम्हारा,
तुम दिक्षा-शिक्षा में गुणी बने।।

कई ग्रन्थों के सृजनकार हो,
कई ग्रन्थों के सम्पादक
कथाकार में मधुर कण्ठ हो,
धरती पर हो शुभ चिंतक।।

पचास बरस की आयु में भी,
तुमने जीवन का लम्बा सफर किया।
तन की बातों को छिपा-छिपाकर,
मन की बातों से काम किया।।

तारतम्य की इस शृंखला में,
तुमने पेचीदा काम किया।
कर्मठता और परिश्रम में,
योगी बनकर युग नाम किया।।

हँसता और निखरता चेहरा
किसी हँसी का मोहताज नहीं।
सुबह मिलो या शाम मिलों तुम,
उनका गहरा कोई राज नहीं।।

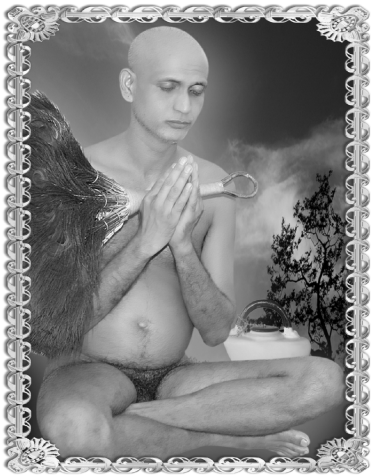

छोटे–छोटे सुख

सपने इतने छोटे कर दो,
फिर देखो साकार बनेंगे।
छोटे-छोटे सुख-दुख में ही,
हम अपना संसार रचेंगे॥

कल की चिन्ता कल पर छोड़ो,
आज का आनन्द उठाओ तुम।
अंधकार में बहुत जी चुको,
अब सुप्रभात उगाओ तुम॥

एक भलाई युगों-युगों तक,
व्यक्ति की पहचान कराये।
उठो नींद से जागो चेतन,
नींद नहीं सम्मान कराये॥

कार्य कुशलता और पुरुषार्थ से,
युग का इतिहास बदल दो तुम।
चलो किसी बंगिया के काँटे,
मिलकर आज हटायें हम।।

सुख-दु:ख जीवन गंगा जमुना,
मानों एक किनारा है।
चलने वाले चल देते हैं,
फिर कौन किसका सहारा है।।

पानी से तुम चलना सीखो,
पर्वत से रूक जाओ तुम।
धरा क्षमा है सदा हमारी,
इतना सा सूत्र बना लो तुम।।

कई सपूत जन्में धरती पर,
उनने युग का निर्माण किया।
कई सपूत तो सृजनकार थे,
कईयों ने मार्ग प्रशस्त किया।।

छोटे-छोटे सुख में रहना,
बड़े स्वयं आ जायेंगे।
संरक्षक धर्म हमारा होवे,
ये सूत्र सदा गढ़ जायेंगे।।

धरती का ऋण चुकाना है,
मानवता पाठ पढ़ाना है।
जो जन्मा है इस धरती
उसे कल का सूरज उठाना है।।

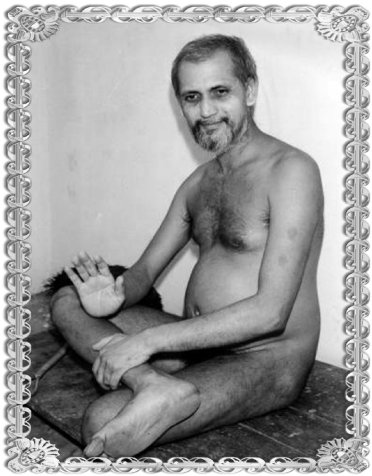

सुख के सागर

जीवन की पगडंडी देखो,
टेढ़ी-मेढ़ी होती है।
सुख का सागर दिखा सामने,
फिर भी किस्मत सोती है।।

वो अंधियारा नहीं चाहता,
क्योंकि सुख का सागर है।
सुख वालों को सुख ही मिलता
सुख ही तो सच्चा रत्नाकर है।।

वही प्रभाकर वही दिशाकर
वही अनन्त का आगर है।
गुरु चरणें में सुख का सागर
वही रत्नों का आकर है।।

सत्य अहिंसा यही धर्म है,
यही हमारा नारा है।
मर्यादा में राम बसे हैं,
राममयी जग सारा है॥

कर्मयोगी में श्रीकृष्ण है,
भक्ति में हनुमान बसे हैं।
सत्य अहिंसा महावीर ने,
सुन्दर अपना मार्ग चुने हैं॥

बुद्ध की करुणा जग प्रसिद्ध है,
मोहम्मद का भाई चारा है।
मातृ भूमि का यही तिरंगा,
हमें प्राणों से भी प्यारा है॥

गुरु गोविन्द का बलिदान है,
गाय हमारी माता है।
नव शिशु से बड़ों-बड़ों तक,
ये ही जीवन दाता है॥

धरती पर ही स्वर्ग बसा है,
धरती का अजब नजारा है।
चहूँ ओर ये प्रेम भरा है,
यहाँ प्राणी प्राणी को प्यारा है॥

जहाँ-जहाँ पर भाई चारा है,
वहाँ अमृत की धारा है।
सुख का सागर वहीं मिलेगा,
जो मात-पिता का प्यारा है॥

वसुन्धरा के वसुनन्दी जी

सरल स्वभावी हितोपदेशी,
सबके मन में बसते हो।
वसुन्धरा के वसुनन्दी हो,
फूलों जैसे सजते हो।।

महाव्रतों में महाव्रती हो,
इस युग के अभिनन्दन हो।
करुणा सागर दिव्य दृष्टि हो,
सारे जग का नत वन्दन हो।।

विद्वानों के स्नेह पात्र हो,
यशोगाथा के गान बने।
उगते सूरज तुम्हें नमन है,
धरती पर अरमान बने।।

जीवन मूल्यों को समझा तुमने,
जीवन का उत्थान किया।
कोई कैसा आया चरणों,
उसको निकट में बिठा लिया।।

पत्थर को मूरत दे देते,
काँटों में भी फूल खिला।
अनपढ़ और अनगढ़ जो आये,
उनको सच्चा सम्मान दिया।।

पथ के राही गुरु आप हो,
फिर सुन्दर मार्ग दिखाते हो।
बिन पहचाना राही आवें,
उसको भी गले लगाते हो।।

मानवता भी चीख रही है,
कोई तो धरती अवतार बने।
शायद कोई पुण्यशाली है,
जो धरती का उद्धार करे।।

वसुन्धरा पर देखो इक दिन,
वसुनन्दी जी आयेंगे।
तम का सागर दूर भगेगा,
ज्ञान का दीप जलायेंगे।।

चिन्ता की कोई बात नहीं है,
अब सूरज उगने वाला है।
इस धरती पर वसुन्धरा पर
शुभ चिन्तक आने वाला है।।

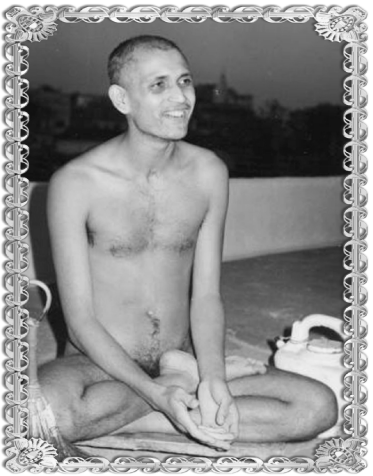

युग निर्माता वसुनन्दी जी

गीता और कुरान में देखो,
भजन और अजान में देखो।
चहुँ ओर सुख का सागर है,
दूर से नहीं, पास से देखो।।

अवतार की लम्बी कतार में,
महापुरुषों ने जन्म लिया।
विवेकानन्द व अरविन्दों ने,
भारत का नक्शा बदल दिया।।

युग बदलेगा ऋतुएँ बदली,
मौसम मुड़-मुड़कर आते हैं।
सृष्टि ने भी करवट बदला,
ऐसा मानव कह जाते हैं।।

युग निर्माण की इस गाथा में,
एक तपस्वी जन्म लिया।
युग निर्माता वसुनन्दी जी
युग ने इक ऐसा नाम दिया॥

पतित जनों को पावन करते
धरती का शृंगार किया।
मिट्टी से महल बना दिये है।,
मिट्टी को वरदान दिया॥

राष्ट्र हितैषी सात्विक वृत्ति,
यही तुम्हारा परिचय है।
श्रम से श्रमण मौन से मुनि,
यही तुम्हारा निर्णय है॥

गंगा जैसी निर्मल धारा, चारित्र हिमालय जैसा है।
विष कंटक में निष्कंटक है, फिर बोलो संशय कैसा है॥

श्रम को जीवन बना दिया है,
योगी में वेष बदल डाला है।
धरती का ऋण चुका दिया है,
सत्य अहिंसा व्रत पाला है॥

महावीर सा त्याग भरा है, गोमटेश सी ऊँचाई।
शिष्टाचार में शिष्ट बने हो, ऐसी हमने छवि पाई॥

व्यक्तित्व और कृतित्व में,
कितना निखार ये पाया है।
संस्कृति और प्रकृति ने भी,
अपना वाक्य भी दुहराया है॥

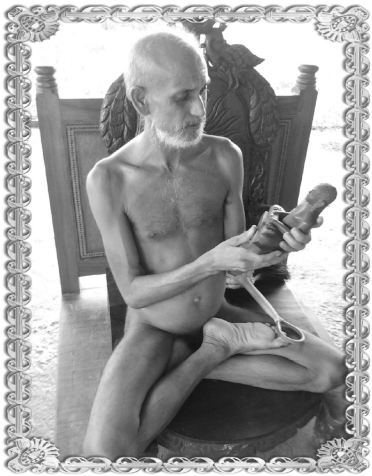

अनहत गूँज

तुम्हें खुशी है हमें खुशी है,
ये कैसी गूँज सुनाई है।
जीवन वृत्त बदल डाला है,
क्या सूरज की किरण दिखाई है।।

किंवदन्ती जीवन चर्या,
ऋषि मुनियों में नाम लिखा।
भारत का उत्थान हुआ है,
इक योगी ने जन्म लिया।।

बयां नहीं होती है जिनकी,
ऐसी मिशाल वो पायी है।
यश गाथा भी दूर-दूर तक
कानों ने हमें सुनाई है।।

शुभकामना प्रकृति देती,
क्या अनहत गूंज पायी है।
एक नहीं हजारों देखे,
जिनने सच्चाई पायी है॥

सामाजिक में समय-समय पर,
बड़े-बड़े उत्थान किये।
जिनको गिनाना मुश्किल लगता,
इतिहासों में लिखा दिये॥

रोग-शोक का काम नहीं है,
निष्कंटक पथ देते हो।
एक रूप में काम अनेकों,
कैसे बोलो करते हो॥

जीवन की बंगिया में देखा,
रंग बिरंगे फूल खिले।
कभी इधर से कभी उधर से,
गुरुवर के वो संग चले॥

क्षण-भंगुर जीवन को पाकर,
कला निपुण सा काम किया।
चिन्तन शैली मंथन जैसी,
नई पीढ़ी को काम किया॥

कई उपाधि मिली आपको,
फिर भी उनमें न रंच रचे।
उपाधि व्याधि कहते सबको,
सिर्फ समाधि ही उत्कृष्ट कहें॥

इतिहास साक्षी है

कुछ पन्ने लिखते-लिखते
स्वयं इतिहास बन जाते हैं।
कुछ शब्द सुनते-सुनते
खुद गीतों में ढल जाते हैं॥

लकीर कागज पर खींचों या रेत पर,
इतिहास साक्षी हो जाता है।
चरित्र ही जिनका इतना पावन,
इतिहास गवाह हो जाता है॥

कला निपुण में आप हो गुरुवर,
मुख मुद्रा कह जाती है।
छवि आपकी मनमोहक है,
हृदय पटल लग जाती है॥

नवीन-नवीन रचना का रचकर,
महाग्रन्थ का काम किया।
बैठे-बैठे सृजन किया है,
महाकाव्य का नाम दिया।।

गुण गाथा उनकी होती है,
जो अनुपमेय काम कर जाते हैं।
ऐसे पुण्यवान धरती पर,
कभी कभार ही आते हैं।।

महाकाव्य मय जीवन जिनका,
पथ प्रदर्शक बन जाता है।
उनका चरित्र लिखते-लिखते,
कलम सफल हो जाता है।।

कवि मनीषी गाथा लिखते,
शाश्वत संबंध बन जाते हैं।
कोई तुलसी कोई कबिरा
कोई घनश्याम कह जाते हैं।।

स्वर्णोदय में इतिहास लिखेंगे,
स्वर्णाक्षर बन जायेंगे।
निष्पक्ष हृदय के धारी गुरुवर,
समता के गीत गायेंगे।

स्वाभिमान गुरु का गाये
सम्मान हृदय से गाते हैं।
भक्त आपके चरण कमल में,
दौड़े-दौड़े आते हैं।

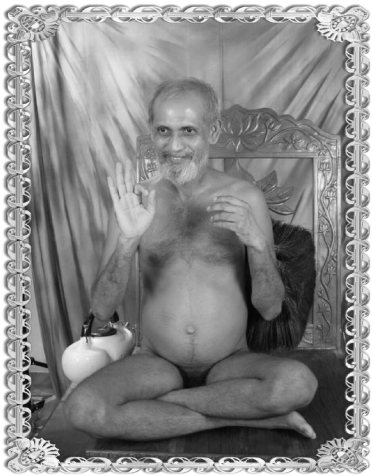

जिनवाणी पुत्र

बहुविध भाषा के उन्नायक,
अहंकार को तजते हैं।
विनम्र भाव से आप निरन्तर,
णमोकार ही जपते है॥

कई ग्रन्थों के सृजनकार हैं,
मृदुभाषी में आप सरल।
अमृत का निज पान किया है,
नहीं बाँटते आप गरल॥

दृढ़ निश्चय है कार्य कुशल हैं,
जीवन का पथ अपनाया है।
निष्ठा और श्रम में बीता,
लेखन में समय बिताया है॥

आशीर्वाद दुआ बन जाता,
वाक्य दवा बन जाती है।
जहाँ बैठते मरुस्थल में भी,
वहाँ हवा बन जाती है॥

जिनवाणी के आप पुत्र हो,
रवि सम जिनका आदर है।
उन्हें नहीं है कल की चिन्ता,
सुखमय जिनकी चादर है॥

मन का मंथन मार दिया है,
निज का चिंतन जगा लिया।
अनगिनत रूपों में तुमने,
अपना दृश्य छिपा लिया॥

पूजा ख्याति से दूर रहे हो,
बस अपने में अपना खोज लिया।
जब खुद चेतन भगवान यहाँ पर,
बस उनको ही तुमने पूज लिया॥

ऋषि संन्यासी साधु सम् हो,
निर्ग्रंथ मार्ग पर कदम रखा।
चित्रों को चरित्र बना डाला,
निज स्वभाव को नरम रखा॥

सत्यं शिवम् सुन्दरम् बन कर,
तुमने जीवन का मार्ग जिया।
ये कठिन मार्ग था, सरल बनाया,
हर पथ को ही तुमने फूल किया॥

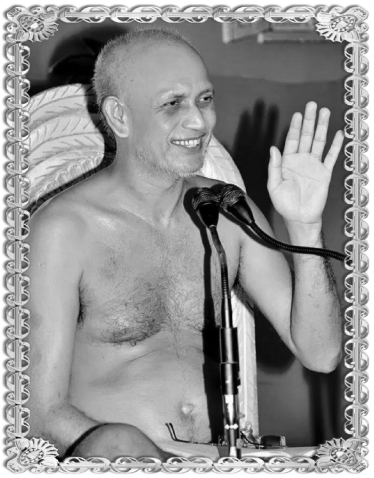

महावीर के लघुनंदन

तुम चलते-फिरते गगनचुम्बी हो,
तुम उगते-उगते सूरज हो।
इस धरती की बने धरोहर,
तुम निर्ग्रंथों के तीरथ हो॥

चित्रकार भी सोच न पाते,
कौन सी मूरत भर दूँ मैं।
पत्रकार भी विस्मृत होते,
कौन सी चर्या लिख दूँ मैं॥

महावीर के लघुनन्दन हो,
निर्ग्रंथों का मार्ग चुना।
नहीं कल्पना कोई करता,
ऐसा गुरु का वाक्य सुना॥

परमागम में कुन्दकुन्द हो,
अध्यात्मक में अमृतचन्द्र।
न्यायशास्त्र में अकलंक स्वामी,
चमत्कार में कुमुदचन्द्र॥

भक्ति करने मानतुंग हो, तार्किक में हो समन्तभद्र।
आगम का पाठ पढ़ाते सबको, ऐसे युग के हो बसन्त॥

अपरिग्रही रहते जग में,
वसुनन्दी जी नाम रखा।
विद्यानन्द को गुरु बनाया,
शब्द-शब्द साकार किया॥

अनुकरणीय है वाक्य तुम्हारे, जो मानव मंत्र कहाते हैं।
शब्द-शब्द में जिनवाणी है, मैत्री का पाठ पढ़ाते है॥

साधारण से दिखने वाले,
कई संतों ने नाम लिया।
कई संतों ने चरणों आकर,
अपना गुरुवर बना लिया॥

सरल हृदय है जग में जिनका,
जो विद्यानन्द की शान है।
निकट भव्य हो, पंचम युग के,
श्रमण जगत में नाम है॥

गरिमामय है बातें उनकी,
जो जिनवाणी का मंथन है।
उनके श्री चरणों में मेरा,
कोटि-कोटि वन्दन है॥

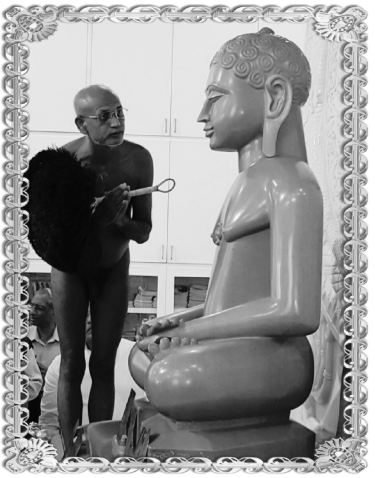

अमृतमय जीवन है

टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी को,
तुमने पग से सफल किया।
बस निकल पड़े हो मार्ग बनाकर,
ज्ञानी संतों में नाम किया।।

मद का मत्सर छू न पाया,
ऐसा अमृत का पान किया।
कष्टमयी था ये जीवन भी,
इसको भी अमृत रसपान किया।।

सौरभ मय है जीवन जिनका,
बस वीणा-वादिनी बजती है।
कण्ठ विराजी सरस्वती माँ
ओठों पे जिनवाणी सजती है।।

स्वर्णिम जीवन जिनका जग में,
सो सात समुन्दर पार गये।
जीवन की बंगिया को सींचा,
वो मानवता के काम किये॥

निज स्वरूप को पाकर तुमने,
शिष्टाचार दिखाया है।
निष्ठा से जीवन को पाला,
संतोष हृदय में पाया है॥

श्रवण जगत के अनुपम पारखी,
तुम सफल सुफल शुभ काम किये।
प्रख्यात बनोगे इसी जगत में,
तुम जैन धर्म की शान किये॥

स्वर्णोदय जो वर्ष आया है,
अर्द्ध शतक कहलाता है।
जिओ हजारों वर्ष यहाँ पर
ये तप संयम का नाता है॥

व्यापक और विख्यात बनो तुम,
और विकासमय गाथा हो।
बस अमर बेल सा बन जायूँ,
सिर्फ आप चरण में माथा हों॥

शब्द हजारों बौने हो गये,
ऐसी गुरुवर की गाथा है।
जो एक बार चरणों में आता,
वो सुख शांति ही पाता है॥

अध्यात्म शिरोमणि

तुम अखिल शिव के सूर्य प्रतापी,
अध्यात्म शिरोमणि का नाम दिया।
निज चर्या से चर्चा करते,
समयसार का भान दिया।।

नियमसार को घट में विराजा,
मूलाचार का चिन्तन है।
प्रवचनसार मय जीवन जीते,
पंचास्तिकाय का मंथन है।।

शब्द-शब्द आगम चर्या है,
परमागम का रस पान किया।
अध्यात्म जगत के शिरोमणि हो,
तुम वसुनन्दी शुभ काम किया।।

दूरदर्शिता कूट-कूटकर
सोमदेव की नीति है।
उमास्वामी से सूत्र बनाकर
जो मोक्ष महल की रीति है॥

लगन लगी है जिन आगम की,
फिर सृजन सृजेता कहलाते।
अहोरात्र चिंतन में डूबे,
फिर आगम के सूत्र बता जाते॥

शुभ चिंतक हो जिन शासन के,
आदर पूर्ण समर्पण है।
तपा-तपाकर देह तपायी,
ये अन्तर्मन का दर्पण है॥

अभिनन्दन है ऐसे गुरु का,
जो अध्यात्म शिरोमणि कहलाते।
निरीह वृत्ति विचरण करते,
गुरु विद्यानन्द को बतलाते॥

सुखद क्षणों के तुम बसन्त हो,
तुम चलते-फिरते जैन संत हो।
नहीं बसेरा कहीं बनाया,
तुम मानव देह के परम हंस हो॥

अध्यात्म जगत में जन्म लिया है,
अध्यात्म सरोवर पाओगे।
उत्कृष्ट भावना रही आपकी,
बस मोक्षपुरी को जाओगे॥

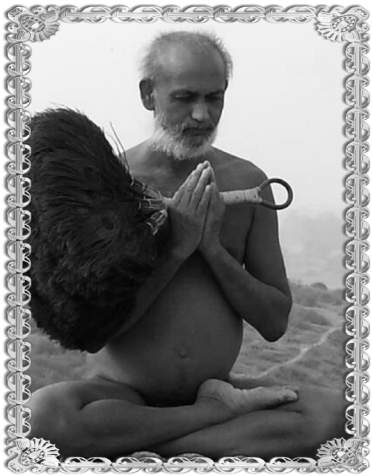

मृत्यु से मृत्युंजय तक

देह मरी है हर जन्म में,
आतम तो अजर अमर है।
जब जाना है उसके घर को,
फिर काहे का डर है।।

मृत्यु जीती मृत्युञ्जय हो,
परम समाधि साध रहे।
जब मृत्यु की बेला आये,
सीना तानकर सदा खड़े।।

देह तजोगे देहातीत हो,
क्षण भंगुर भी क्या जीना है।
चलो चले हम अपने घर को,
जहाँ अमृत रस को पीना है।।

सुख-दुख का कुछ काम नहीं है,
वहाँ सुखातीत बन जाता है,
एक बार जो जाता मानव,
फिर लौट नहीं वो आता है॥

हर जन्म में मृत्यु पायी,
अब समाधि को करना है।
इक बार समाधि जो साधी तो,
फिर जन्म-मरण से तरना है॥

भो ज्ञानी! क्यों आये जग में,
गुरुवर तुमसे पूछ रहे।
हर प्रश्नों का उत्तर देते,
अब क्यों गहरा सोच रहे॥

रत्न पारखी बहुत देखे हैं,
अब मृत्यु पारखी बनना है।
बड़े-बड़े शूरमाँ भी देखे
अब कषाय विजेता बनना है॥

निज गुण लखना, अवगुण तजना,
बात यही मन भायी है।
सारे विश्व की शक्ति लगा दो,
आत्म शक्ति ही आयी है॥

निज आतम को जाना तुमने,
फिर मृत्यु का काम नहीं।
वसुनन्दी मय रूप बना लो,
फिर कोई अधूरा धाम नहीं॥

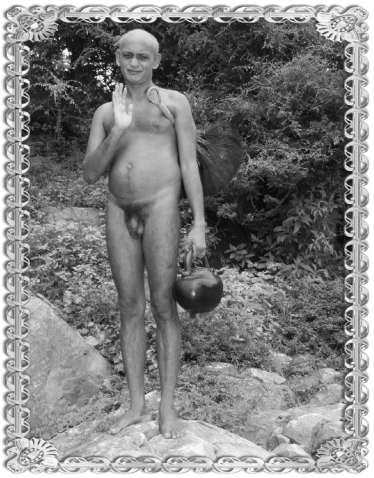

पंक नहीं पंकज बनो

माना कीचड़ में जन्म हुआ,
मत कीचड़ में रहना तुम।
गुरुवर ने तो सदा कहा है,
निर्मल नीर से बहना तुम॥

अनुपमेय सागर में रहना,
वहाँ कीचड़ का काम नहीं।
पंक नहीं, पंकज ही बनना,
क्योंकि मुक्ति का दाम नहीं॥

शाश्वत और समन्वय बनना,
सात्विक भेषी बनना तुम।
निष्पक्ष का पाठ पढ़ाना,
राग-द्वेष को तजना तुम॥

समीक्षा करना सुबह शाम की,
क्या खोया क्या पाया है।
जो भी सात्विक रहता यहाँ पर
वो सुखमय जीवन पाया है।।

अभिमान का तजना हरदम,
स्वाभिमान बढ़ाना है।
पग-पग पर सम्मान मिलेगा,
सुन्दर लक्ष्य बनाना है।।

अपरिग्रही सब सुख पाता,
निष्ठा अलख जगाती है।
लगन लगी हो शिव सुख मग से,
वह अन्तर रूप दिखाती है।।

काँटे फूल बन जाते हैं,
जब पुण्य उदय में आता है।
पाषाण परमात्मा बन जाता है,
बस सृष्टि का फेर घुमाता है।।

इसी पंक में कमल खिलेगा,
फिर पंकज बन जाओगे।
चलो गुरु की शरण को पा ले,
फिर मोक्ष महल तक जाओगे।।

श्रद्धा भक्ति वो गहना है,
इस गहने का कोई मोल नहीं।
वसुनन्दी दरबार वही है,
मिलता है पर तोल नहीं।।

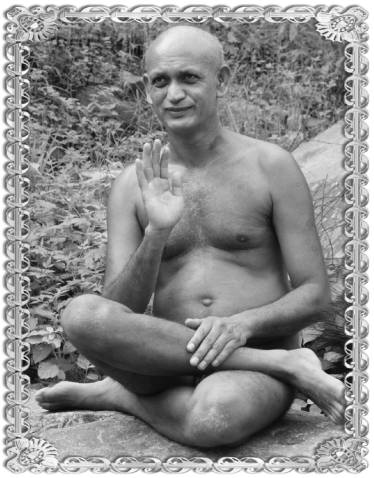

जिनशासन जयवन्त रहे

लेखा-जोखा रखता है जो,
वह जिन शासन कहलाता है।
इसका न कोई कर्ता-धर्ता,
ये अमिट अनादि वाला है॥

रंच मात्र भी नहीं है संशय
इसकी हर बात निराली है।
दानव मानव बन जाते है,
अन्धकार उजियाली है॥

जिनशासन जयवन्त रहेगा,
क्योंकि गरिमा वाला है।
गहन तत्व चिन्तन कहता,
आत्मीयता का पाठ निराला है॥

जिनशासन की ध्वजा लगी हो,
भूत-प्रेत भग जाते हैं।
सत्य-अहिंसा इसका नारा,
प्राणी मात्र जुड़ जाते हैं॥

भली मित्रता इसमें देखी,
भले-भले सब काम भला है।
भारत में जिनशासन जन्मा,
विश्व भर की सभी कला है॥

चतुर्विंशति तीर्थंकर है,
जो मोक्षमार्ग ने नेता हैं।
हितोपदेशी वीतरागी है,
सर्वज्ञ नाम सृजेता हैं॥

भव सागर से पार उतारे,
आदर का पात्र बनाता है।
तन का रोगी मन का रोगी,
ये सबको पार लगाता है॥

वसुनन्दी भी जिनशासन के,
उत्तम पात्र कहाते हैं।
मोक्ष मार्ग के तिलक शिरोमणि,
निर्ग्रंथ मार्ग बतलाते हैं॥

जिनशासन की करो प्रभावना
ये उच्च गति को देता है।
चाहे पुरानी नैय्या होवे,
ये भव से पार ही खेता है॥

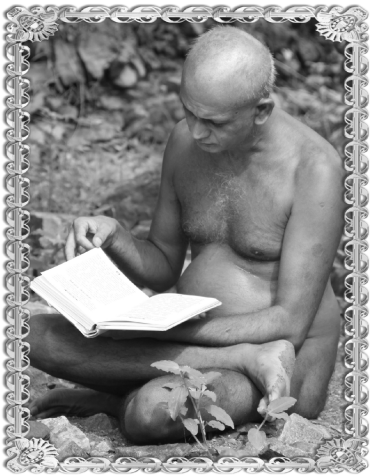

अहंकार या णमोकार

जीवन के दो पथ हैं प्यारे,
अहंकार या णमोकार।
दोनों में कितना अन्तर है,
इक चमत्कार इक नमस्कार॥

दोनों को आकार मिला है,
दोनों ने साकार किया।
एक गया है उच्च गति को,
एक नरकों का द्वार लिया॥

गुरुवर कहते प्रवचनों में,
णमोकार की जाप करो।
कोई नहीं है जगत में अपना,
अपनी रक्षा आप करो॥

गुरु वचनों से जीवन मिलता,
अमर बेल बन जाता है।
गुरु शरण में जो भी आता,
निज का दर्शन वो पाता है।

नहीं भटकता भव सागर में,
जीवन को सफल बनाता है।
चमत्कार में तुम न उलझो,
नमस्कार सुख पाता है।।

णमोकार है जीवन दाता,
अहंकार भटकाता है।
णमोकार से गति सुधरती,
अहंकार गिर जाता है।।

णमोकार से पुण्य जगा है,
अहंकार दुख खानी है।
णमोकार है सुख का जीवन
अहंकार दुख पानी है।।

णमोकार से सब तर जाते,
ये मंत्र बड़ा बलशाली है।
तीन लोक में तीन काल में,
इसकी महिमा भारी है।।

अतिशय पुण्य जगाता जग में,
ये णमोकार की महिमा है।
जो चतुर्गति में भटक रहे हैं,
ये अहंकार की महिमा है।।

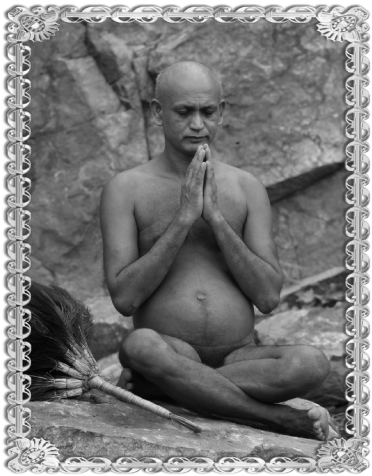

गुरु देह परिचय

राजस्थान की पावन माटी,
धौलपुर जिला कहाता है।
मनियां तहसील ग्राम विरौंधा,
गुरुवर का जन्म बताता है।।

आसौज वदी अमावस्या को,
गुरुवर धरती पर आये थे।
तीन अक्टूबर सन् सड़सठ को
मंगलवार दिन भाये थे।।

रिखबचन्द्र व त्रिवेणी माता,
नाम दिनेश सुहाया था।
रवि सम् तेज भरा था जिसमें,
वो पुण्य लालीमा लाया था।।

चार भाई व तीन बहिनें थी,
बी-कॉम तक शिक्षा थी।
छहढाला की पंक्ति सुनकर,
अपनी दिशा भी मोड़ी थी।।

ब्रह्मचर्य व्रत ले करके,
फिर प्रतिमाधारी बन गए थे।
क्षुल्लक बनकर मुनि पद पाया,
फिर उपाध्याय भी बन गए थे।।

एलाचार्य बन ज्ञान बढ़ाया,
छोटी आयु में ज्ञान लिया।
आचार्य श्री जी विद्यानन्द है,
जिनको गुरु सम्मान दिया।

तीन जनवरी सन् पन्द्रह को,
कुन्दकुन्द भारती स्थान चुना।
विद्यानन्द आचार्य श्री ने,
आचार्य पद बहुमान दिया।।

श्रुतसागर जी बड़े भाई हैं।
प्रज्ञसागर जी छोटे हैं।।
देखो तीनों आचार्य श्री हैं,
विद्यानन्द की बंगियां है।।

वसुनंदी विख्यात हुए हैं,
सारे जग में नाम हुआ।
धरती तल पर अमर रहो तुम,
सभी दिशा सम्मान हुआ।।

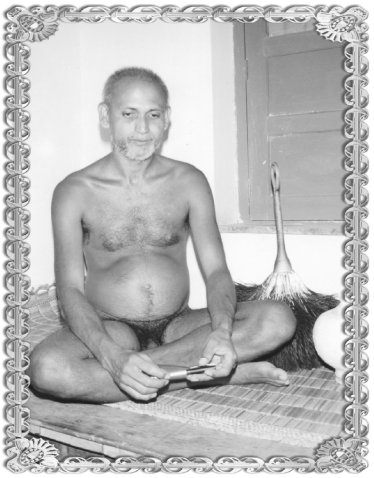

गुरु आत्म परिचय

मोक्ष महल के तुम राही हो,
मुक्ति मंजिल जाना है।
नीर-क्षीर सा भेद बनाया
भेद विज्ञान जगाना है।
समोशरण है बंगियां आपकी,
सिद्धशिला घर जाना है।
अपने घर को जाने तक का,
ये अंतिम सा बाना है॥
पिता अरिहन्त कहाते इनके,
जिनवाणी सुन माता है।
कुन्दकुन्द से भाई हैं जिनके,
अनुप्रेक्षा ही माता है।

सात तत्व हैं मित्र सरीखे
कषाय जिनके शत्रु है।
शत्रु-मित्र को एक परखते,
समता भाव से नाता है॥

ज्ञान को खेल बनाया जिनने
दर्शन-चारित्र जगाया है।
आठ अंग की माला पहनी,
परिषह को अपनाया है॥

राजहंस हो आसमान के,
तुम्हें दूर तलक तक जाना है।
ये नश्वर संसार जगत का,
इसे छोड़कर जाना है॥

आत्म समाधि परम समाधि
ये परम तत्व का चिंतन है।
तुम चलले-चलते थको न राही,
अब मंजिल तक का मंथन है॥

स्वागत करते ऋषि जन भी,
तुम ऐसे भेष को पाया है।
ये रत्नत्रय का बाना है,
ये बड़े पुण्य से पाया है।

आत्म तत्व के परम विजेता,
तुम चरणों में अभिनन्दन है।
तुम सिद्धशिला के राही हो,
तुम्हें कोटि-कोटि वन्दन है॥

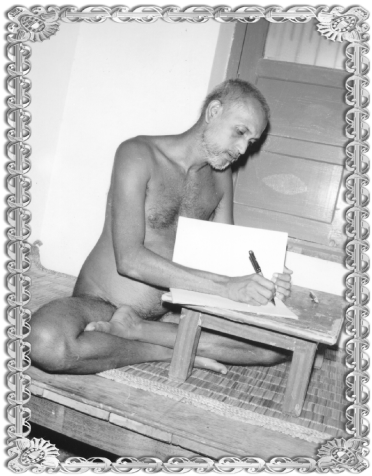

गुरु उपाधि

''युवा हृदय सम्राट'' कहाये,
''गुणसागर'' नाम कहाता है।
''आध्यात्मिक संत'' बने है गुरुवर
बस ''बाल योगी'' का नाता है॥

''युवा मनीषी'' तपोनिधि हो
''आदर्शोत्तम शिष्य'' कहाते हो।
''अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी'' गुरुवर,
''उपसर्ग विजेता'' दिखलाते हो॥

''वात्सल्य निधि'' के भरे खजाने,
तुम ''ज्ञान दिवाकर'' को गुरुवर।
तुम ''श्रमण रत्न'' को अवनी तल पर,
''तीर्थोद्धारक'' बने हो गुरुवर॥

"वात्सल्य रत्नाकर" नाम कहाया,
"साधना के शिखर पुरुष" हो।
"अध्यात्म सरोवर के राजहंस" हो,
"अन्वेषक श्रमण" में महापुरुष हो।।

"धर्म सम्राट" व "श्रुतावतार" हो,
तुम "लौहपुरुष" भी कहलाते।
"दीक्षा सम्राट" बने हो गुरुवर,
फिर "विश्वगुरु" बन सहलाते।।

"ज्ञानमार्तण्ड" व "श्रमण भास्कर"
"परम वाग्मी" हो गुरुवर।
"आत्मन्वेषी" निरीह साधक"
"चिन्तन के महारथी" गुरुवर।।

"चेतना के सजग प्रहरी" हो,
"श्रमण शिरोमणि" व "तत्त्ववेता"।।
"आदर्श अनुशासक" हो गुरुवर,
प्रखर चिन्तक" स्व तत्त्व वेत्ता।।"

तुम "अक्षर शिल्पी" कहलाते हो,
"निष्काम भक्त" सा काम किया।
"समाधि सम्राट निर्यापकाचार्य" हो,
"परम तपस्वी" में नाम किया।।

"निर्ग्रंथ गौरव गणधराचार्य" हो,
"मोक्ष मार्ग प्रकाशक" हो गुरुवर।
"ज्योतिर्विद" व "वाचनार्ह" हो,
"मानवता के मसीहा" हो गुरुवर।।

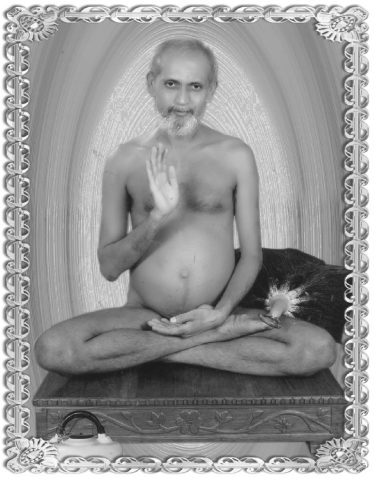

गुरु मन का मन्दिर है

मैल धो रहे सारे जग का,
ये गुरु का मंदिर ऐसा है।
निर्मल दिव्य स्वरूप दिखा है,
गुरु प्रभाव कुछ ऐसा है॥

बहुत बने हैं मंदिर जग में,
गुरु मंदिर जैसा द्वार नहीं है
हर मंदिर में झुके न मस्तक,
ये गुरुवर का पतवार सही॥

गुरु मंदिर में दीप जलाओ,
नहीं अंधेरा मन में हो।
तम के बादल सब छट जायेंगे,
फिर सूरज का तेज प्रखर हो॥

श्रद्धा का मंदिर तुम्हीं बना लो,
ज्ञान का दीप जला लो तुम।
बिन तेल बाती का जलता ये,
फिर अपने सपने सजा लो तुम॥

गुरु मंदिर को हृदय बिठा लो,
ये तीन लोक का राज बना।
इससे सुन्दर मंदिर ना है,
ये कई प्राणी का भाग्य बना॥

मिट्टी चूना से बहुत बने हैं,
पर ये तो श्रद्धा मंदिर है।
इक बार बनेगा फिर न हिलेगा,
क्योंकि ये दिल के अंदर है॥

श्रद्धा और विश्वास बनाकर
गुरु का मंदिर बनाना है।
पाँच महाव्रत पाँच स्तम्भ हैं,
पाँच समिति खजाना है॥

तीन गुप्ति है तीन द्वार सी,
जिनसे रक्षा पाना है।
छत्तीस मूलगूणों की महिमा,
जन-जन को बतलाना है॥

ये मंदिर भी सारे लोक का,
उच्च शिखर कहलायेगा।
जो गुरु के मंदिर आता है,
वो सिद्धालय में जायेगा॥

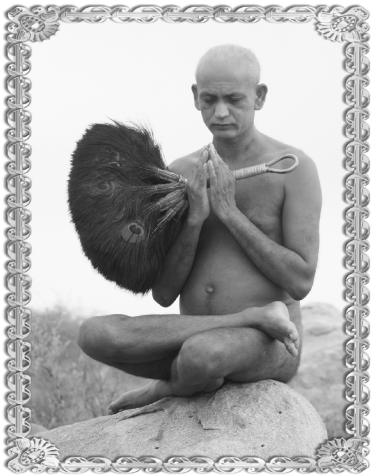

विद्यानंद के शिष्य कहाते

चतुर्मुखी हो बहुभाषी हो,
कई कला निपुणता धारे है।
परम यशस्वी, सदा तपस्वी,
दूरदर्शिता धारे हैं।।

बहुत आयामी युवा मनीषी,
तुम जीवन्त इतिहास बने।
विद्यानंद के शिष्य कहाते,
विद्यानन्द से संत बने।।

बहुरंगी दुनिया को तजकर
ज्ञान विद्यालय खोला है।
फिर अपने में आकर गुरुवर,
खुद को सदा टटोला है।।

गुरु वाक्य ही अमर सूत्र है,
बस उनको निशदिन जपते हो।
धर्मदृष्टि हो ज्योतिवन्त हो,
कषाय देह को तपते हो॥

तुम चलते-चलते राह बने,
बैठे तो धाम बनाया हैं
खड़े हो गए तो नभ तारे भी,
सबने शीश झुकाया है॥

मानो इन चरणों में चंदन है,
जो इतनी शीतलता आयी है।
इक बार बता दो हे गुरुवर,
ये शांति कहाँ से पायी है॥

तुम कौन महल से आये हो,
तुम्हें किस-किस दर पर जाना है।
क्या नाम रखा है गुरुवर ने,
बालो कितनो ने पहिचाना है॥

मेरा छोटा सा परिचय है,
मैं गुरु चरणों का दास रहूँ।
बस हाथ जोड़कर विनती है,
गुरु चरणों अरदास करूँ॥

परिचय-परिचय बन जाता है,
क्या अलख जगायी है गुरुवर।
मैं लिखता-लिखता हारा हूँ,
फिर हाथ रखा है क्या गुरुवर॥

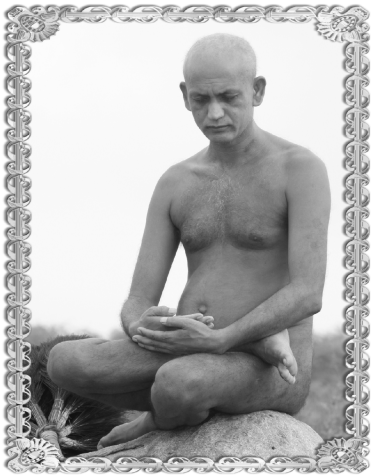

आसमान के ध्रुव तारा

नीलगगन के आप चाँद हो,
आसमान के ध्रुव तारा।
मीठी वाणी बोल-बोलकर,
सारा जग भी तुम तारा।।

वीर प्रभु की कृपा रही है,
जब धरती पर जन्म लिया।
भारत भूमि धन्य हो गई,
जो ऐसे मुनियों का वरण किया।।

प्रकृति खुद तलाश करती है,
कब किससे क्या करवाना।
उसे पता है सभी खबर है,
कब किसकी गाड़ी चलवाना।।

अनुभव के मोती पाये हमने,
आप चिन्तन के सागर हो।
हर मजहब को जाना तुमने,
तुम ही तो दृष्टि नागर हो॥

नहीं प्रशंसा सुनते अपनी,
पर निन्दा से दूर रहे।
विनयशील हो निष्ठावान हो,
हर कर्त्तव्य भरपूर रहे॥

गुरु आज्ञा को धारण करते,
गुरु आज्ञा बलिहारी है।
इसीलिए तो जनता आती,
गुरु चरणों में सारी है॥

मूल्यांकन भी अपना करते,
अनेकानेक गुण के धारी हो।
गुप्त साधना करने वाले,
रत्नत्रय सम्पत्ति धारी हो॥

हुए प्रतिष्ठित गुरु चरणों में,
वसुनन्दी जी नाम मिला।
आचार्य शिरोमणि कहलाते हो,
विद्यानन्द का प्यार मिला॥

साहित्य प्रेम में रचे पचे हो,
सृजन किया है कृतियों को।
स्वयं लेखनी सोच में पड़ती,
मात किया है कवियों को॥

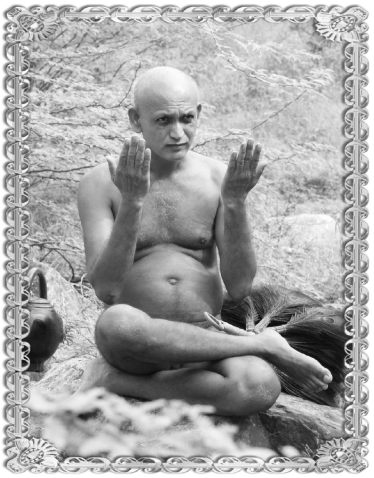

जग में रहते जग से न्यारे

बड़े-बड़े निर्णय को करते,
तभी तो निर्णय सागर कहते।
सहज-साधना करने वाले,
सारे परिषह हँसकर सहते।।

उद्‌गार आपके जिनवाणी है,
जिनमें कलयुग का सार भरा।
राम कृष्ण महावीर नहीं है,
फिर भी धरती पर सार भरा।।

प्रयोजन से आयोजन है,
निस्वार्थ भावना भरी हृदय।
साहित्य और संस्कृति का,
आप बने हो नये निलय।।

प्रकृति ने सम्मान किया है,
संस्कृति ने दीप जलाया है।
आप दिवाकर जग में रहते,
आतम का रूप जगाया है।।

विशद ज्ञान के आप गुणी हो,
हम शिष्यों को गुरुवर प्यारे।
मीठी वाणी सदा बोलते,
जग में रहते जग से न्यारे।।

फुरसत कभी न मिलती देखी,
इंतजार से दूर रहे।
गुरु भक्ति में डूबे रहते,
ईर्ष्या-निन्दा मजबूर रहे।।

दृष्टि कोण सदा बदला है,
संगठन का काम किया।
नन्दन वन के तुम पंछी हो,
ऋषि-मुनियों का सम्मान किया।।

रचनाकार भी बड़े अचूक हो,
क्या काव्य निरोले लिखते हो।
''कल्याणी'' सा लिखा काव्य जो
पहले उसको लखते हो।।

दुनिया भी हैरान दिखी है,
तुम गुरुवर कितना चलते हो।
आज यहाँ पर कल हो वहाँ पर
तुम सूरज जैसे निकलते हो।।

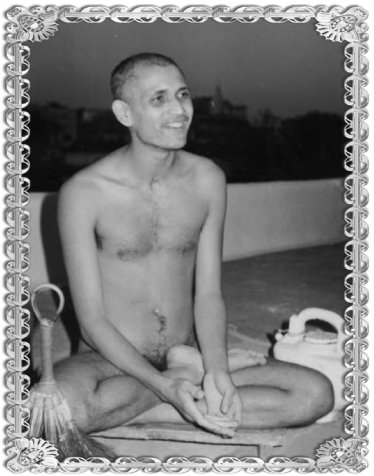

अभिनन्दन गुरु का वंदन है

इन चरणों में क्या न मिलता,
जो सारे जग को खोजूँ मैं।
क्यों खोज रहे हो दुनिया भर को,
चलों गुरु चरणों को पूजूँ मैं।।

अभिनंदन है इन चरणों का,
जो वंदन स्वीकार करें।
जिनके उर में समा गए हैं,
फिर तो उसका उद्धार करें।।

गुरु चरण है प्रभु साक्षी,
फिर डर-डरके क्यों चलना है।
मुक्ति दूत है गुरु हमारे,
सूरज प्रखर निकलना है।।

अन्धकार का काम नहीं है,
गुरु तेज पुंज बनकर आये।
आओ देखें निकट चलें हम,
क्यों धरती पर पाप उगाये॥

रत्नाकर हो रत्न पारखी,
तुम अचल विश्व के दाता हो।
अहंकार से रहित दिखे हो,
गुरुवर के वाक्य प्रदाता हो॥

तुम मधुर कण्ठ के महाधनी हो,
क्या कथा श्रवण करवाते हो।
बच्चे बूढ़े खो जाते हैं,
आँखों से नीर बहाते हो॥

माता बहनें सुन-सुन अचरज,
वो कानाफूसी करती हैं।
क्या कथा गुरुवर कहते है।,
सुन-सुन अँखियाँ झलकी हैं॥

क्या सोमा सीता कथा कही,
यह दृश्य बड़ा बलबेला है।
टी.वी. चैनल छोड़-छोड़कर,
देखो गुरुवर का मेला है॥

आओ प्राणी क्यों भटक रहे हो,
गुरु चरणों का पान करो।
यही मिलेगी मुक्ति सहेली,
केवल आकर रसपान करो॥

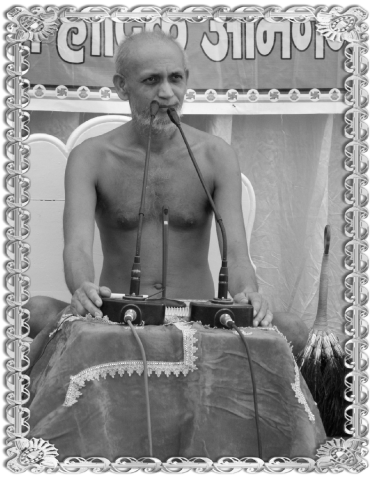

गुरु लेखनी अमर रहेगी

मधुर कण्ठ के आप धनी हैं,
प्रवचन कला प्रखर है।
गुरु लेखनी अमर रहेगी,
जब तक ज्ञान दिवाकर है॥

''आहर दान'' व ''मीठे प्रवचन''
कृतियाँ भी ''गागर में सागर'' हैं।
''दान के अचिन्त्य प्रभाव''
''स्वाति की बूँद'' प्रभाकर है॥

फिर ''सीप का मोती'' आया,
''दशामृत'' दश धर्म बताया।
''चूको मत'' कहते हैं गुरुवर,
''जय बजरंग बली'' भी मन भाया॥

''चैन की जिन्दगी'' जिओ हमेशा,
''सम्राट चन्द्रगुप्त'' क्या कृति लिखी।
''श्रद्धा अंकुर'' फूट पढ़े हैं
''बोधि वृक्ष'' की लहर दिखी॥

फिर ''गुरुत्तं'' आया गुरुवर,
पाँच भागों में कह डाला।
''आज का निर्णय'' ''खुशी के आँसू''
''संस्कादित्य'' ने किया उजाला॥

आधुनिक समस्यायें हैं,
प्रामाणिक तो समाधान है।
''जिन दर्शन से निज दर्शन है,
वही जगत में पुण्यवान है॥

''धर्म की महिमा'' ''हीरों का खजाना''
''जीवन का सहारा'' बता रही।
''शायद यही सच है''
''खोज क्यों रोज-रोज'' बता रही॥

दु:खों से मुक्ति ''मिल जाती है,
फिर ''सफलता के सूत्र'' मिले।
''विद्यानन्द उवाच'' बताकर
गुरु चरणों में शीश रखे॥

''हाइकू'' भी कृति बनायी
''क्षरातीत अक्षर'' भी है।
इन कृतियों का वंदन करते,
जिनकी महिमा आज भी है॥

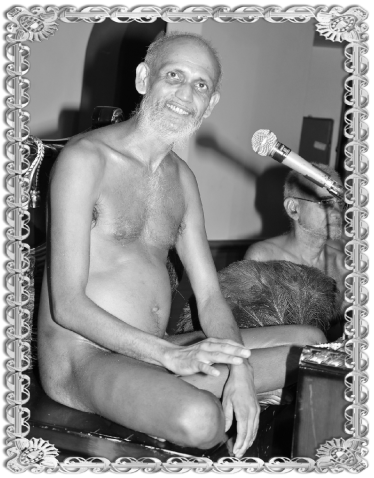

चातुर्मास जहाँ करते हैं

चातुर्मास जहाँ करते हैं, नई उमंग आ जाती है।
बूढ़े-बच्चे खुशी मनाते, रौनकता भर जाती है।।
सन् नवासी हमें बताया,
चातुर्मास की फुहार लगी।
''भिण्ड'' नगर का प्रथम नाम है,
क्षुल्लक पद की लगन लगी।।
''टीकमगढ़'' ''श्रेयांसगिरी'' है,
''द्रोणगिरी'' भी नाम दिखा।
''श्रेयांसगिरी'' में फिर आये थे,
ज्ञान का दीप जला दिया।।
''सागर'' नगर मे धूम मचा दी,
विनम्र सागर साथ रहे।

''ललितपुर'' के क्षेत्रपाल में,
युवा शक्ति से जुड़े रहे॥
फिर ''दमोह'' में आये गुरुवर,
कुण्डलपुर के निकट कहा।
''गढ़ाकोटा'' में अलख जगा दी,
''श्रेयांसगिरी'' फिर तीजा सुना॥
''फिरोजाबाद'' व ''टूण्डला'' भी
गुरु का दीवाना कहलाता है।
फिर ''दिल्ली'' में कदम बढ़े थे।
''मेरठ'' भी उन्हें बुलाता है॥
फिर 'मेरठ' में आये गुरुवर, सबका मन ये हर्षाया।
'दिल्ली' के कृष्णानगर में, फिर 'शौरी-बटेश्वर' मन भाया॥
फिर देहरा ''तिजारा'' आये गुरुवर,
''मथुरा'' ''तिजारा'' फिर बारी थी।
फिर ''मेरठ'' का पुण्य जगा है,
फिर ''बौलखेड़ा'' मन भाया है॥
'हस्तिनापुर' व 'फिरोजाबाद' भी
गुरु के नाम से अंकित है।
'बौलखेड़ा' ये चातुर्मास भी,
'अजमेर' नगर निशंकित है॥
''जयपुर'' में भी गूँज उठा था,
फिर ''बौलखेड़ा'' का नाम हुआ।
फिर ''दिल्ली'' में आकर गुरुवर,
सुख का सागर बता दिया॥

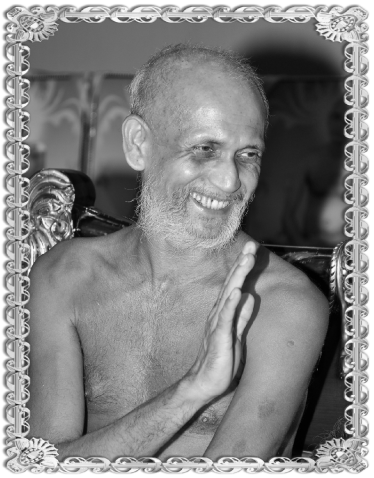

गुरु के शिष्य महान हैं

आओ शिष्यों को वंदन कर ले,
जिनकी गुरु भक्ति निराली है।
कोई दशहरा कोई होली,
कोई चरणों में दीवाली है।।

ज्ञानानंद जी मधुर कण्ठ में,
सर्वानंद वैरागी हैं।
जिनानन्द प्रवचन कला में,
आत्मानंद गुण अनुरागी हैं।।

निजानंद निज में ही रहते,
सहजानंद बड़भागी हैं।
संयमानंद संयम ही पाले,
प्रज्ञानंद गुरु चरणों के पागी हैं।।

ध्यानानंद जी सदा निराले,
श्रद्धानंद सेवा का धारे।
शिवानंद जी गुणग्राही हैं,
प्रशमानंद जी युवा जगाये॥

पवित्रानंद जी पवित्र मन हैं,
सीधा मुनिवर पद धारे हैं।
छोटी उम्र में संयम धारा,
अजब-गजब कर डाले हैं॥

विज्ञान सागर जी खोजबीन में,
विशंक सागर अलख जगाये हैं।
नित्यानंद जी गुरु चरणों में,
अपना शीश झुकाये हैं॥

सुखानंद है विश्वानन्द जी,
अब सुधर्म कहलाते हैं।
पुण्यानंद जी पुण्य जगाते,
वो सच्ची बात बताते हैं॥

भव्य प्रकाश व प्रभाशीष भी,,
गुरु बंगियां के पुष्प बने।
जो भी बंगियां में जन्मा है,
वो गुरु चरणों का फूल बने॥

जब शिष्यों में इतनी गरिमा,
फिर गुरु की बात निराली है।
ये वसुनन्दी है पुण्य वाटिका
इसकी कलियाँ भी मतवाली हैं॥

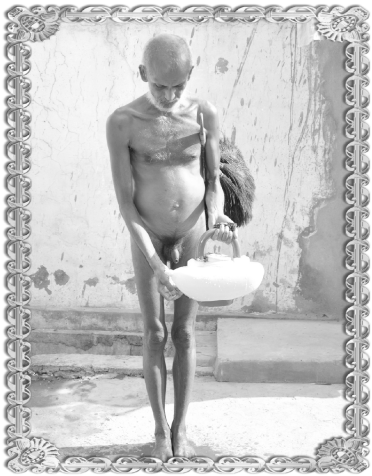

गुरु वचन अमृत का प्याला

सृजन-सृजेता आप हो गुरुवर
हम तो चरणों के चाकर हैं।
इन चरणों में सागर मिलता,
आप गुणों के आगर हैं॥

कठिन मार्ग को चुनने वाले,
सरल मार्ग बतलाते हैं।
गुरु वचन अमृत का प्याला,
भक्त सदा पी जाते हैं॥

नहीं प्रश्न है इनके अंदर
ये हर प्रश्नों के उत्तर हैं।
गुरु वाक्य ही सूत्र बताता,
आप तो गुरु अनुत्तर हैं॥

गम्भीरता में आप हो सागर,
खड़्गासन में बाहुबली।
सूरज के सम् तेज भरा है,
चर्चा होती गली-गली॥

रचनात्मक रचना को रचते,
जो अन्तर मन को छू जाती।
क्या बात लिखी है, हे गुरुवर।
जो दिल में अंकित हो जाती॥

कवि कविता पढ़ने लगते,
मंत्र मुग्ध हो जाते हैं।
चरणों में आने वाले प्राणी,
दूरदर्शिता पाते हैं॥

चिन्तन का कोई छोर नहीं है,
वो आमसान बन जाता है।
गुरु के एक इशारे से ही,
वो भी कागज बन जाता है॥

लेखनी भी आतुर होती,
कब अंकित हो जाऊँ कागज।
मैं सफल बनूँगी इन हाथों में,
मैं गुरु आँखों का हूँ काजल॥

गुरु वचनों को मंत्र मान लो,
संसार पार हो जाओगे।
मेरे गुरुवर मोक्ष प्रदाता,
भव सागर से तर जाओगे॥

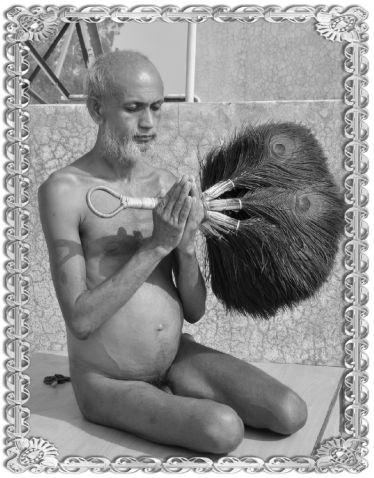

गुरु की शिष्या अलख जगाती

गुरु आज्ञा का पालन करना
गुरु की सीख बताती है।
गुरु आज्ञा ही प्राण बताती,
हृदय कमल खिल जाती है।।

गुरुनन्दनी गुरु आज्ञा है,
ब्रह्मनन्दनी आतम ज्ञान।
श्री नन्दनी सब सुख दाता,
सौम्यनन्दनी सम्यक्ज्ञान।।

पद्मनन्दनी पद्म सरोवर,
वीरनन्दनी गुण की खान।
वर्धस्वनन्दनी, वर दायिनी,
वर्चस्वनन्दनी सुख की खान।।

श्रेयनन्दनी पतित जनों को,
प्रबोधनन्दनी आश जगाए।
सुरम्यनन्दनी सुर का सागर,
यशोनन्दनी भाग्य बनाए॥

सुयोगनन्दनी योग्य बनेगी,
प्रकाम्यनन्दनी निधि महान।
देवनन्दनी भरी दिव्यता,
प्रभानन्दनी जगत जहान॥

सौम्या नन्दनी और ऋजुता
शीलप्रभा है श्रद्धावान।
प्रज्ञा की प्रज्ञा है पैनी,
और प्रमेया की सेवा जान॥

पतित जनों को मार्ग बताती
ये गंगा जैसी रहती है।
निष्कलंक दुनिया में रहकर,
जिनवाणी को कहती है॥

ये अपनी पहचान कराती,
परिचय खुद में मोहताज है।
ये शिष्याएँ अलख जगाती,
मानों गुरु के हर राज हैं॥

गागर में तो सागर भरती,
अमृत का झरना झरता है।
ये सत्य अहिंसा धार रही है,
मुक्ति सा मारग लगता है॥

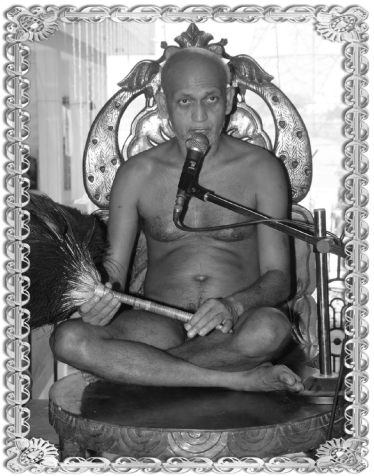

कमठ नहीं, कर्मठ ही बनना

पंक नहीं, पंकज ही बनना,
सत्ता तज, तप को ही भजना।
गुरु वचन ऐसा ही कहते,
कमठ नहीं,कर्मठ ही बनना॥

कीचड़ में तुम कमल खिलाना,
प्यार किसी से न करना।
दुनिया की हर चीज परायी,
सोच समझकर कदम ही रखना॥

चित्र नहीं, चारित्र में सजना,
ये मानव का गहना है।
दुनिया देखो धोखा धड़ी है,
तुम्हें सम्हल-सम्हल के चलना है॥

अधिकार नहीं कर्त्तव्य का जानो,
अधिकार स्वयं मिल जाते हैं।
गुरु चरणों में आना भव्यों,
जहाँ प्रश्न स्वयं सुलझ जाते हैं।।

प्रश्न नहीं उत्तर है ज्यादा,
इसीलिए तो ढूढ़ रहे।
विश्वास नहीं है गुरुवर में,
तभी तो सबसे पूछ रहे।।

मोह-माया में पड़कर प्राणी,
कीचड़ में फंसता जाता है।
मुसीबत में सुन लो प्राणी,
कोई काम न आता है।।

गुरु जगाते धर्म बताकर,
ये संसार निराला है।
तुम चाहे कुछ भी कर लेना,
ये दीवाना है मतवाला है।।

धर्म ज्ञान को भूल रहे हो,
ये अन्त में काम आयेगी।
ऐसा गुरुवर कहते प्राणी,
बोल समझ कब आयेगी।।

भव के बंधन तुम्हें छुड़ाना,
तो गुरु चरणों में आश रखो।
गुरु हमारा सही ठिकाना,
इतना सा विश्वास रखो।।

गुरु परम्परा प्रीत जगाती

जैनधर्म के मूल स्तम्भ हो,
शांतिसागर मुनिवर जान।
बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य हो,
जिनकी निर्मल ख्याति मान॥

दिगम्बरत्व की करी प्रभावना,
तुम शहर नगर तक घूमे थे।
दिखा दिया था भेष दिगम्बर,
फिर शहर नगर भी झूमे थे॥

शांतिसागर के प्रिय शिष्य थे,
पायसागर जी नाम लिखा।
बाईस वर्ष के बाद मिले थे,
दही गाँव वह गाँव दिखा॥

शांति-पाय का साया ऐसा,
जयकीर्ति की चर्या है।
तत्त्वार्थ सूत्र व भक्तामर लिख,
पोस्टकार्ड लिख चर्चा है॥

देशभूषण जी भारत गौरव
भारत की प्रथम उपाधि थी।
जहाँ जन्म लिया है वही समाधि
ऐसी साधना साधी थी।

विद्यानन्द भी राष्ट्र संत में,
प्रथम उपाधि पाये थे।
श्वेतपिच्छ को लेकर गुरुवर,
सिद्धान्त चक्री कहलाये थे॥

गुरु परम्परा में देखो,
वसुनन्दी भी नाम चला।
शांतिसागर की परम्परा में,
देखो गुरुवर का नाम जुड़ा॥

महक रही है देखों बगियां,
ये रत्नत्रय की क्यारी है।
चारित्र के मोती पाये,
इनकी हर चर्या प्यारी है॥

जब तक सूरज-चाँद रहेगा,
जैन धर्म का नाम रहेगा।
जब तक गंगा में पानी है,
गुरुवर की सही कहानी है॥

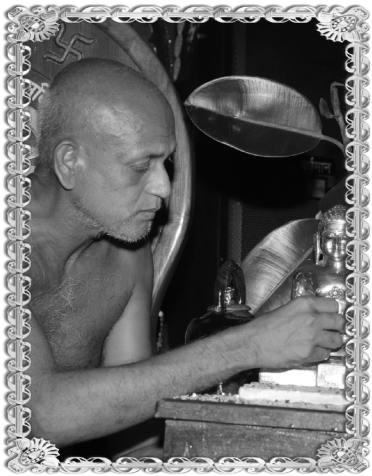

क्या कहते मेरे गुरुवर

पाप तजो पापी न तजना,
क्योंकि वो बदल सकता है।
स्थान नहीं स्वभाव बदलो
तभी वो निखर सकता है॥

पहले भक्त फिर भगवान बनना,
हर काम से पहले पूजाकर।
जिन्दगी से बन्दगी है,
ये कहते हैं मेरे गुरुवर॥

श्रद्धा अंकुर बीज सी होती,
ज्ञान वृक्ष सा होता है।
चारित्र बना हिमालय जैसा,
जो न जाने वो रोता है॥

मर्यादा में राम बनो तुम,
और अहिंसा महावीर सी।
कर्मयोगी में कृष्ण बनो तुम,
भक्ति हो हनुमान सरीखी॥

अंजन जैसे निशंक बनो तुम,
भामाशाह से दानी हो।
हरिश्चन्द्र सा सत्य बोलना,
भगतसिंह बलिदानी हो॥

राजा मधु सा वैराग्य होवे,
भरत सरीखा आत्मज्ञानी।
बाहुबली सी करो तपस्या,
नहीं रावण सी मनमानी॥

लक्ष्मण जैसा भ्रातृ प्रेम हो,
बलराम सी शानी हो।
राजा श्रेणिक सा प्रायश्चित हो,
ना मारिच सा अभिमानी हो॥

अकलंक सी करो प्रभावना,
कुन्दकुन्द सा आगम ज्ञान।
समन्तभद्र सी तार्किक बुद्धि,
मानतुंग सा भक्ति मान॥

शांतिसागर सा पुण्य प्रतापी,
विद्यानन्द सा प्रवचन ज्ञान।
ऐसा कहते वसुनन्दी जी,
जिनकी प्रज्ञा बड़ी महान॥

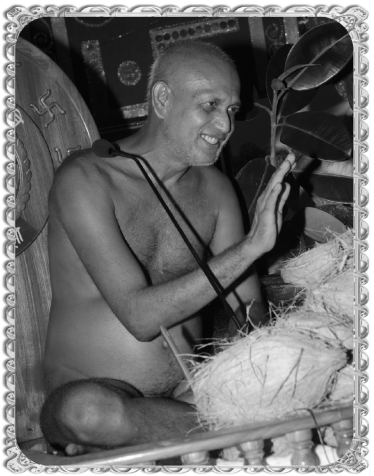

बोल बड़े अनमोल जगत में

दुर्योधन जैसे बोल न बोलो,
न शकुनी सा नीतिज्ञान।
न चाणक्य सी गाँठ बाँधो,
न द्वीपायन सा वैर वान॥

बोल बड़े अनमोल जगत में,
मीठी वाणी बोलो तुम।
पहले तोलो बाद में बोलो,
ऐसी नीति बनाओ तुम॥

बिना विचारे जो बोलते,
वो विचारे हो जाते हैं।
कोई न उनका साथ निभाता,
वो पराये हो जाते हैं॥

जिन्हें सहारा सदा चाहिए,
उनके होते नीचे नैन।
उनके मित्र सच्चे होते
जिनके मीठे होते बैन॥

शीतल जल की धार बनना,
नहीं अग्नि फुंकार बनो,
सीप नहीं मोती ही बनना,
मोती शीतलता फुंहार बनो॥

मीठा बोलकर कपट न करना,
नहीं मानी सा मान बढ़ा।
तू मनुष्य गति का जीव है प्यारे,
मत देवगति का ऐश्वर्य ला॥

बिना पुण्य के कुछ न मिलता,
लेकिन मेहनत से जी न चुरा।
कोई नहीं है शत्रु-मित्र भी,
कोई नहीं है जगत बुरा॥

अपना दृष्टि कोण सम्हालो,
अपनी सोच बदल डालो।
जिन सोचो से फूट पड़ी है,
उनको आज जला डालो॥

कहने से पहले काम करो तुम
तब भाग्य सितारा बन जायेगा।
महापुरुष से काम करो तुम,
महापुरुष पद पायेगा॥

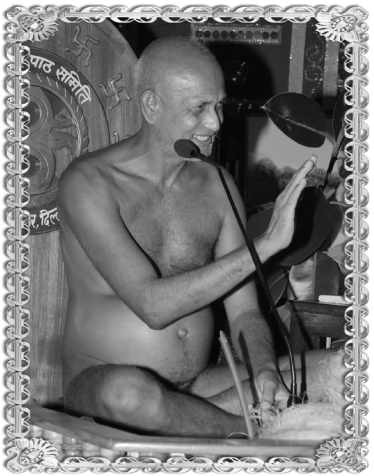

नमस्कार से चमत्कार

दुनिया कहती चमत्कार से,
सब करते नमस्कार है।
पर गुरुवर की वाणी कहती
नमस्कार में चमत्कार है॥

मानतुंग के नमस्कार से,
अड़तालिस ताले टूटे थे।
चंदना के नमस्कार से,
बेड़ी के बंधन टूटे थे।

समन्तभद्र के नमस्कार से,
चन्द्रप्रभु जी प्रकट हुए।
सीता सती के नमस्कार से,
अग्नि नीर में बदल दिए॥

वादिराज के नमस्कार से,
कुष्ट क्षण में चला गया।
सोमा सति के नमस्कार से,
नाग माला में बदल गया॥

कुमुदचन्द्र के नमस्कार से,
पार्श्वनाथ जी प्रकट हुए।
चेलना सती के नमस्कार से,
पति के कर्म भी बदल गए॥

श्रीपाल को नमस्कार से,
सागर पार लगाया था।
द्रोपदी के नमस्कार से,
चीर पे चीर बढ़ाया था॥

सेठ सुदर्शन नमस्कार से,
शूली भी सिंहासन होती।
मैना सुन्दरी के नमस्कार से,
कुष्ट रोग की छुट्टी होती॥

वज्रकर्ण के नमस्कार से,
राजा भी नतमस्तक होते थे।
सती अंजना नमस्कार से
पुत्र हनुमन्त से होते हैं॥

धनञ्जय के नमस्कार से,
जहर पुत्र का उतर गया।
मनोवती के नमस्कार से,
गज मोती प्रबन्ध हुआ॥

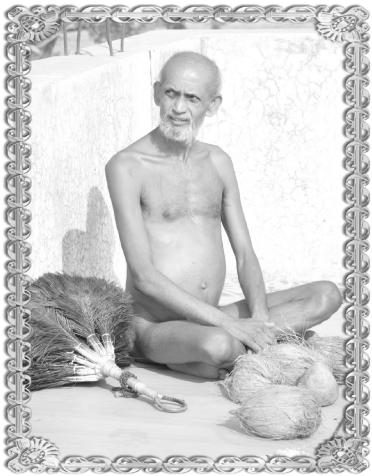

गुरुवर आप तो जादूगर हो

गुरु आपकी मूरत देखी,
इक बार तुम्हारा रूप लखा।
वाणी में जादू या मूरत में
इक बार चला तो साथ चला॥

एक बार गुरु के परिचय से
सम्बन्धों का जोड़ बना।
कई जन्मों का नाता है,
मेरे मन ने सदा कहा॥

आशीर्वाद की बहुत मुद्रा,
दुनिया भर में देखी है।
लेकिन गुरुवर आपकी मुद्रा,
दुनिया भर में अनोखी है॥

गुरु नहीं तुम पिता भी मेरे,
माँ का भी साया उड़ा दिया।
हम छोटे-छोटे बच्चे थे,
हमें जीवन का पाठ पढ़ा दिया॥

चमत्कार तो बहुत देखे हैं,
गुरुवर आप तो जादूगर हो।
मन परिवर्तन क्षण में करते,
आप ही सूर्य उजागर हो॥

धरती पर भगवान मिले हैं,
बड़े भाग्य से पाये हैं।
हम गुरुवर के शिष्य बनेंगे,
यही भावना लाये हैं॥

ऊर्जा मन में भर देते हो,
सूरज के सम तेज भरा।
वाणी में ओज समाया है,
गुरु पिता का रूप लगा॥

मेरे तो गुरुवर तुम्हीं राम हो,
श्रद्धा से शीश झुकाता हूँ।
नहीं पुष्प के थाल हाथ में,
भक्ति का अर्घ चढ़ाता हूँ॥

मन में कोई नहीं भावना,
बस चरणों का दास रहूँ।
अन्त समय में गुरु चरणों में,
लीन समाधि, तल्लीन रहूँ॥

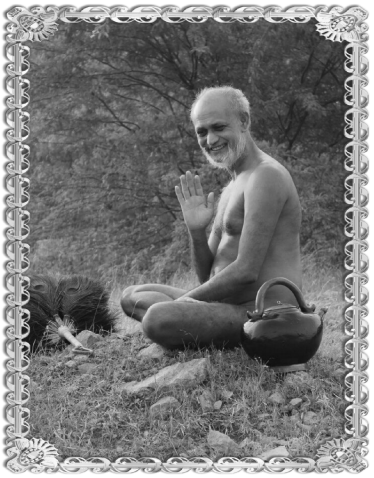

सबसे प्रिय मेरे गुरुवर

सीमाओं में नहीं बँधे हो,
मर्यादा आगम पाली है।
व्यक्ति के व्यक्तित्व बने हो,
वचन अमृत की प्याली है।।

पुरुषों में तुम महापुरुष हो,
अक्षर शिल्पी के धारी हो।
संस्कृति और राजनीति को
भारत गौरव बतलायी है।।

लाट-लपेट की बात न करते,
कम अक्षर में कहते हो।
सबसे प्रिय मेरे गुरुवर,
सबसे न्यारे रहते हो।।

दुनिया भर में इन गुरुओं की,
कैसी मारामारी है।
आप दिगम्बर बने हो गुरुवर
न मन में मायाचारी है।

निजानन्द का पान करत हो
अनुभव का पान कराते हो।
मोक्ष मार्ग की पगडंडी को,
सच्चा सीधा बतलाते हो॥

ज्ञान कोश के भण्डारी हो,
अनुपम ज्ञान लुटाते हो।
निर्ग्रंथों के भेष मात्र को,
मुक्ति का मार्ग बताते हो॥

दुनिया भर में आप घूमते,
संसार परिवार बताते हैं।
वसुधैव कुटुम्ब का सूत्र बताते,
उदार हृदय बतलाते हैं॥

कोई बनता शांतिसागर
कोई विद्यासागर है।
आप रहना वसुनन्दी से,
आप गुणों के आगर है॥

जीवन कला बताने वाले,
आप सारथी अर्जुन के।
राम-कृष्ण भी आप हो गुरुवर,
सच्चे मार्ग दिखाने के॥

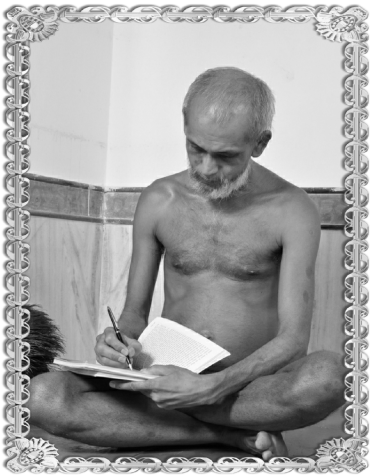

क्या कहती है देह आपकी

मस्तिष्क भारत का गौरव है,
कान आपके गंगा-सिन्धु।
ललाट हिमालय सा दिखता है,
भौंह आपकी चंद्र सी बिन्दु॥

आँख आपकी गोलगोल है,
मानों अमृत का सागर है।
ग्रीवा आपकी मधुर कण्ठ है,
वृक्षस्थल प्रेम का सागर है॥

कंधे आपके धर्म नीति हैं
दोनों का ज्ञान कराते हैं।
और नासिका राग-द्वेष को,
मल का मल भार घटाते हैं॥

ओंठ आपके चुम्बक जैसे,
जिव्हा आपकी त्रस नाली है।
रूखा-सूखा जो भी डालो,
वो अमृत की प्यारी हो॥

पेट आपका बहुत बड़ा है,
जिसमें गुण-दोष समाये हैं।
पीठ आपकी धरती माँ है,
जिसका वजन उठाये है॥

पंजा आपका आशीर्वाद है,
उँगली दशो-दिशाएँ हैं।
कमर आपकी युवा शक्ति है,
जो सन्मार्ग दिखाएँ हैं॥

पैर आपके मोक्षमार्ग हैं,
निश्चय व्यवहार बताया है।
हस्त रेखा भी क्या कहती है,
जिसमें सबका भाग्य समाया है॥

पैर के पंजे लक्ष्य आपके,
चिन्ह दिगम्बर धारा है।
पैर की उँगली दश धर्म हैं,
बस इनका ही एक सहारा है॥

घुटने कहते कभी न टिकना,
बाल आपके ज्ञान क्षेत्र हैं।
पृष्ठ भाग तो कभी न दिखता,
क्योंकि पीछे न मुड़ना है॥

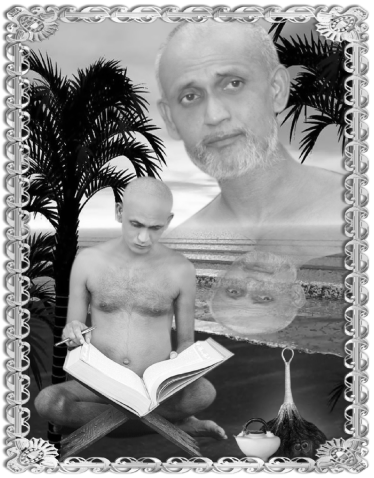

कृपा सिन्धु है मेरे गुरुवर

हमें प्यार से जग से निकाला,
न दु:खों का भान दिया।
कृपा सिन्धु हैं मेरे गुरुवर,
दुनिया भर का सम्मान दिया॥

कुछ भी नहीं था मैं भी गुरुवर,
तुमने हीरा बना दिया।
मैं तो आँखों से अन्धा था,
और तुमने सूरज दिखा दिया॥

कौन कहता है गुरु आपको,
आप तो हम सबके भगवान हो।
दया सिमट कर रह गई गुरुवर,
आप ही सबके दयावान हो॥

कंकर को शंकर कर डाला,
पानी को अमृत कर डाला।
गुरु कृपा से सब कुछ होता,
गुरु कृपा है मात्र उजाला॥

जब तक इनकी नहीं कृपा है,
तब-तब रातें अंधियारी हैं।
गुरु कृपा से सूरज उगता,
अब गुरुवर मेरी बारी है॥

नहीं मांगता चाँद-सितारे,
बस आशीर्वाद दिला देना।
मेरी झोली भर जायेगी,
बस एक नजर ही कर देना॥

नजर आपकी बलिहारी है,
जिस पर पूर्ण कृपा हो जाये।
उसका ही भाग्य बदल जायेगा
जिन पर गुरु कृपा हो जाये॥

नहीं चाहिए कोई उपाधि,
ना चाहूँ सम्मान मिले।
बस गुरुवर के चरण-कमल में,
दिन औ रात आराम मिले॥

गुरुवर मेरी टूटी नैय्या,
सागर भी देखो गहरा है।
डूब न जाऊँ इस सागर में,
चारों ओर से पहरा है॥

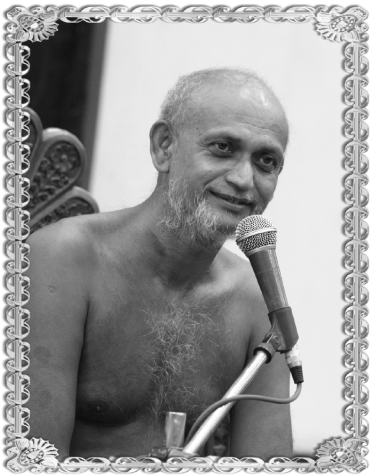

नजर आपकी नजराना है

जिस पर पड़ी नजर गुरुवर की,
भाग्य सितारा हो जाता है।
नजरों से ही सब कुछ मिलता,
नजर नजारा कर जाता है।।

नजरों में ही अपनापन है,
मत नजरों को दूर करो।
नजर आपकी हम पर होवे,
मत नजरों से दूर करो।।

नजर ही भाग्य बनाती गुरुवर,
नजर ही आग लगाती है।
हर नजर से मुझे बचाना,
नजर नगर सजवाती है।।

नजर-नजर का खेल जगत में,
एक बनाती एक लुटाती
नजर जगाती नजर सुलाती,
नजर ही दिल के घाव बढ़ाती॥

नजर-नजर में उठना गिरना,
नजर-नजर में बात बनी।
नजर छुरी है शहद लिपटी,
जो बिन चाकू के जीभ कटी॥

नजर आपकी मेरे गुरुवर
नजराना सी लगती है।
नजर जमाना नजर फिराना,
आपकी मर्जी लगती है॥

नजर-नजर से मरते प्राणी,
गुरु नजर से तर जाते।
नजर बनाओ बहुमुखी सी,
फिर वैभवशाली बन जाते॥

गुरु नजरों में स्थान पाओ,
ये सारे सुख का सागर है।
गुरु नदियों का नीर नहीं है,
गुरु वात्सल्य का सागर है॥

प्रतिभाशाली नजरवान हो,
उच्च कोटि के नजराना।
तीन लोक की नजर उतारें,
नजर हमीं पर ठहराना॥

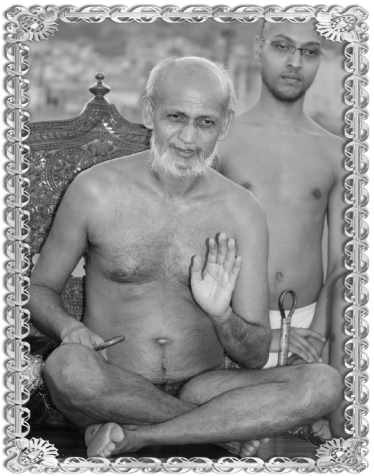

गुरु आशीर्वाद

गुरु आशीर्वाद की छाया है,
गुरु शिष्य को वरदानी।
गुरु आगम की दिनचर्या है,
गुरु पुराण की बने कहानी॥

गुरु प्रभावी दुनिया भर में,
गुरु हमारी रजधानी।
श्रमण संघ के गुरु नायक हैं,
गुरु गंगा का है पानी।

स्वर्ग-मोक्ष का राह बताते,
गुरु की वाणी कल्याणी।
गुरु अमृत की धारा है,
पीना चाहे हर प्राणी॥

गुरु अनुभव है मोक्षमार्ग है,
गुरु की हर बात निराली है।
गम के मारे राही जन को,
गुरु त्यौहार दीवाली है॥

गुरु हृदय है शिष्य पटल का,
गुरु छत्र की छाया है।
गुरु सम्बल है शिष्य जगत को,
गुरु में प्रभु समाया है॥

गुरु संयम है, गुरु क्रिया है,
गुरु से क्या बात छिपाना है।
गुरु धर्म है गुरु कर्म है,
हमें लक्ष्य को पाना है॥

गुरु वीर है, गुरु कुम्भ है,
गुरु शासन की ध्वजा बने।
गुरु आदर्श गुरु तपस्वी,
गुरु शिष्यों को ओज बने॥

गुरु चरणों में सुख साधन है
गुरु यशस्वी हमें दिखे।
गुरु समाज है, गुरु प्रतिष्ठा,
गुरु सूरज के तेज दिखे॥

वीतरागमय मेरे गुरुवर,
वसुनन्दी जिनको नाम मिला।
सब शिष्यों को तारने वाले,
मोक्षपुरी में नाम लिखा॥

परम समाधि साधक हो

अन्त समय में संबोधन भी,
शुभ गति कर जाता है।
परम समाधि साधक गुरुवर,
हृदय कमल खिल जाता है।।

विसर्ग सागर सागर में
और दमोह में विदेह सागर।
परमानन्द अलवर में देखे,
मंडौला में ज्ञानसागर।।

बौलखेड़ा में इच्छानन्द जी,
दिल्ली में देखी सुमति मति।
विसर्गमति की भली समाधि,
अन्त समय में बंधी गति।।

विजय नन्दनी फिरोजाबाद में,
बौलखेड़ा में मोक्ष नन्दनी।
परम समाधि अन्त समय में,
दिल्ली में देखी सिद्धनन्दनी॥

सुभद्रनन्दनी बौलखेड़ा में,
निर्वाण नन्दनी मंडौला।
कल्याण नन्दनी दिल्ली देखी,
अजब-गजब का था चोला॥

सुकल्याण नन्दनी दिल्ली में फिर,
परम समाधि धार गई।
गुरु चरणों में वन्दन करके,
परम गति की राह लई॥

गाँव बुढ़ाना इक कबूतर,
उड़ता उड़ता गिरा गोद में।
णमोकार सा मंत्र सुनाया,
अन्त समय था गुरु गोद में॥

जिन जीवों ने गुरु चरणों में,
अपना भाग्य जगाया है।
सच मानों उनने जीवन में,
गुरुवर को गुरु बनाया है॥

परम समाधि बड़े पुण्य से
नरभव सफल बनाता है।
पुण्यवान ही अन्त समय में,
गुरु चरणों में आता है॥

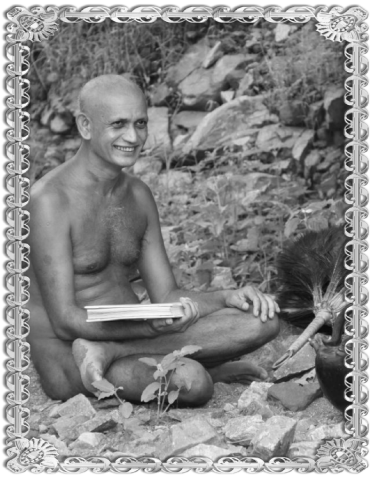

निष्कलंक चर्या को पाला

अहोरात्री आत्म ध्यान में,
पल-पल जिनका बीता है।
इन्द्रिय कषायें और मत्सर को,
फिर परिषह हो जीता है।।

णमोकार की माला करते,
ॐ का ध्यान लगाते हैं।
निष्कलंक चर्या को पाला,
ह्रीं का रहस्य बताते हैं।।

मूलाचार सी चर्या पाली,
मोक्षमार्ग पर कदम रखा।
माला चलती दोनों हाथ में
जो मोक्ष पथ का बना सखा।।

पाषाण को प्रभु बनाया,
दानव को मानव करते हो।
तुम चलते-फिरते तीर्थ बने हो,
तुम गाँव-गाँव तक चलते हो।।

उपकारी उपकार को माने,
जो चरणों में आता है।
इस जन्म का या पूर्व जन्म का,
गुरुवर तुमसे ही नाता है।।

तुम्हें मंजिल को पाना है,
सौभाग्य हमारा हे गुरुवर।
हमने भी अपना लक्ष्य बनाया,
संग चलेंगे हे गुरुवर।।

संस्कारों की रही सम्पदा,
पुरुषार्थ जगाया अन्तरमन।
जागरुकता भरी हृदय में,
सदा समर्पण गुरु वंदन।।

उद्देश्य को सतत ध्यान में,
आत्म-साधन करते हैं।
मेरी भी गुरुवर यही भावना,
हम सब चरणों में रहते हैं।।

भविष्य जिन का उज्ज्वल बनकर,
साधु-संत दोहरायेंगे।
फिर देखना कभी-कभार ही,
धरती पर संत दिखायेंगे।।

पूर्वाचार्यों में नाम लिखेगा

भद्रबाहु से खेल खेल में
अर्हद्बली सा चिन्तन है।
धरसेन सी सोच है जिनकी,
पुष्पदंत सा मंथन है।।

भूतबली सी भली साधना,
कुन्दकुन्द का परमागम।
उमास्वामि से सूत्र बताये,
समन्तभद्र सा तार्किक ज्ञान।।

पूज्यपाद सी भक्ति करते,
अकलंक स्वामी सा ज्ञान प्रमाण।
वीरसेन सी श्रद्धा देखी,
जिनसेन सा जिनका नाम।।

पात्र केसरी योगीन्द्र देव सा
जिनका लक्ष्य निराला हैं
मानतुंग सी भरी कसौटी,
नेमिचन्द्र सा उजाला है॥

चामुण्डराय सा तेज है जिनमें
वादीभ सिंह सा नीतिज्ञान।
शुभचन्द्र की शुभ कला है,
सकलकीर्ति सा सम्यग्ज्ञान॥

लोहाचार्य सी उमंग जगी है,
वप्पदेव सा वाद-विवाद।
शिवकोटि सा गुरु बनाया,
इन्द्रनन्दी सा श्रुतावतार॥

वट्टकेर के मूलाचार हो, वीरनन्दी के आचारसार।
यति वृषभ के गूढ़ रहस्य हो, धृतिषेण के ज्ञान प्रचार॥

माणिक्य से सूत्र बताये,
रविषेण के पद्पुराण।
विद्यानन्दी के तत्त्वज्ञान हो,
अमित गति के सरल पुराण॥

अमृतचन्द्र सी सूक्ति कहते, पद्मनन्दी सा आगम सार।
वसुनन्दी सा दिव्यज्ञान है, वादिराज सी भक्ति धार॥

सोमदेव भी जयसेन भी,
ब्रह्मदेव सूरि कहलाय।
पूर्वाचार्यों में नाम लिखेगा,
ऐसा वसुनन्दी जी नाम दिखाय॥

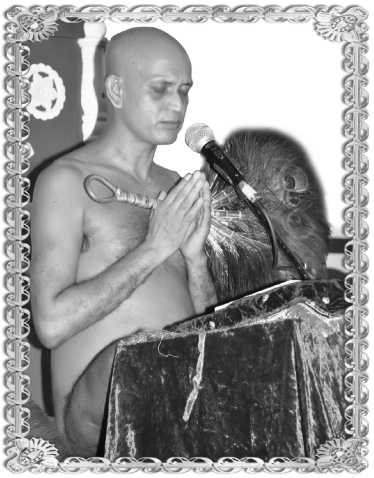

किनसे क्या पाया है

शांतिसागर सा आदर्श बनाया,
पायसागर सा त्याग बताय।
जयकीर्ति सी करी साधना,
देशभूषण सा ज्ञान बताय॥

आदिसागर सी करी तपस्या,
शांतिसागर सा उदय दिखाय।
वीर सागर से दृढ़ विश्वासी,
चन्द्रसागर सा तेज दिखाय॥

महावीर कीर्ति सा भाषा ज्ञान है,
नमिसागर सी विधि बनाय।
कुन्थुसागर सा लेखन करते,
विमलसिंधु सा मार्ग बताय॥

शिवसागर से शिव की साधना,
धर्मसागर से धर्म जगाय।
अजितसागर सा व्याकरण है,
ज्ञानसागर सा ज्ञान बताय।।

श्रुतसागर सी श्रुत भक्ति है,
सुमति सागर से बह्म ज्ञान।
श्रेयांस सागर से आरोहण हो,
और सन्मति सा तत्त्वज्ञान।।

विद्यानन्द सी करी प्रभावना,
कल्याण सागर सा णमोकार।
सुधर्मसागर सा लेखन चिंतन,
और नेमिसागर से हो साकार।।

सूर्यसागर से सूर्य प्रतापी,
अनन्त वीर्य से गुण की खान।
समन्तभद्र सा वैरागी तन,
आर्यनन्दी सा जिनका मन।।

ज्ञानभूषण से शिष्य कहाये,
विद्यासागर लक्ष्य प्रमाण।।
सुबलसागर सी करो समाधि,
बाहुबली सा निर्णय धार।।

निर्मल सागर सी निर्मलता पायी,
वर्द्धमान सा संघ बनाए।
अभिनन्दन से नन्दन वन हो,
वसुनन्दी जी गुण ही पाए।।

हम शिष्यों के आप मसीहा

बड़े पुण्य से गुरुवर पाये,
फिर जीवन का लक्ष्य चुना।
आरोहण होते मोक्षमार्ग में,
मोक्ष पथिक में नाम सुना।।

कदम-कदम से कदम चुना है,
आत्मसात जीवन करते।
बालक सम् निर्विकार हो,
गहन तत्व चिन्तन करते।।

वर्तमान के वर्द्धमान हो,
हम यही भावना करते हैं।
हम शिष्यों के आप मसीहा,
हम आपके पथ पर चलते है।।

परमेष्ठी में नाम लिखा है,
उच्च पदवी के धारी हो।
आचार्य शिरोमणि हो गुरुवर,
तुम सब शिष्यों की तैयारी हो॥

लक्ष्य तुम्हारा मोक्ष गमन है,
मुनि मुद्रा का वरण किया।
सूरज जैसे निखर गये हो,
जब गुरुवर का चरण छुआ॥

पथ-प्रदर्शक गुरु हमारे,
हमने जीवन का लक्ष्य चुना।
अनुकम्पा है गुरु आपकी,
जो आप सा गुरुवर हमें मिला॥

हम कृत्यकृत्य हो गए गुरुवर,
हमें कल्पवृक्ष सा गुरु मिला।
चिन्तामणि भी कामधेनू भी,
और सभी पारखी गुरु मिला॥

दिव्य दृष्टि है गुरु आपकी,
सबका भाग्य बदल देता है।
जो चरणों में आता गुरु के,
वो भी सब कुछ पा लेता है॥

हम चरणों मे आये गुरुवर,
दोनों हाथों की झोली है।
वसुनंदी सा गुरु नहीं है,
ये अन्तर आत्मा बोली है॥

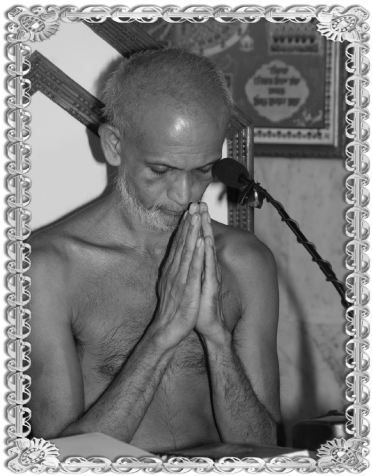

गुरु पंछी है नील गगन के

गुरु पंछी है नील गगन के,
उर्ध्वगमन तक जाना है।
सिद्धालय है धाम आपका,
सिद्धगति को पाना है॥

मृदुवाणी है सखी आपकी,
और नम्रता मित्र बनी।
जिनशासन की ध्वजा थामकर,
बारह भावना संग चली॥

पत्थर में भी प्राण फूंकते,
नैसर्गिक प्रतिभाशाली हो।
विनम्रता और श्रेष्ठ गुणों में,
चेतन में शक्तिशाली हो॥

सिद्धों जैसे अनन्त गुण हैं,
अरिहन्त जैसी वाणी है।
सदा सादगी अपनायी है,
वीणा के जैसी वाणी है॥

ध्रुव तारा हो नीलगमन के
अन्त समय को चमकोगे।
हीरे के जैसा तेज भरा,
अहोरात्र में दमकोगे॥

सदा समर्पित जिन शासन में,
अक्षय गुण भण्डारी हो।
सागर सरीखे गहरे तीर हो,
स्नेह पात्र अधिकारी हो॥

सबको प्रिय लगने वाले,
सबके आप हितेशी हो।
सबको हितकर वाणी कहते,
खान पान स्वदेशी हो॥

आत्मीयता के प्रेरक हो,
इतिहास स्वयं रच जाते हो।
हमें साक्षी गुरु आपकी,
तुम मानस पर छा जाते हो॥

जिनने जाना गुरु आपको,
वो और कहीं न जाते हैं।
सात समुन्दर दौड़-दौड़कर,
आप चरण में आते हैं॥

गुरु मोक्ष मार्ग के प्रहरी हैं

तुम चलते-चलते राह बने हो,
जो बैठ गए तो धाम बने।
जो निकल पड़े तो मोक्षमार्ग हो,
हर भक्तों के काम बने।।

शिक्षा-दीक्षा देते गुरुवर
गुरु मोक्षमार्ग के प्रहरी हैं।
फिर राग-विराग को त्याग दिया,
गुरुवर ही सच्चे हितेशी हैं।।

तिरस्कार भी पुरस्कार है,
काँच भी कंचन बनता है।
गुरुवर के स्पर्श मात्र से,
ये देह भी कुन्दन बनता है।।

हम राह के पत्थर थे गुरुवर,
तुमने मूरत में ढाल लिया।
हम किसी काम के नहीं थे गुरुवर
फिर तुमने आकर लक्ष्य दिया।।

अभिनन्दन हो गुरु आपका,
संघ आपका समवशरण।
उसी शिष्य का लक्ष्य बनेगा,
जो करते हैं गुरु वरण।।

बिन गुरुवर के काम न होता,
बस गुरु नाम की पूजा है।
शिष्यों के भाग्य विधाता है,
फिर दुनिया में न दूजा है।।

गुरु हर प्रश्नों के उत्तर है,
वो सही दिशा के दिशावान।
हम उनसे न हो पायेंगे,
हमें गुरु की छाया जान।।

गुरु की परछाई बनना है,
अक्श गुरु का बना रहे।
वो दर्पण है मोक्षमार्ग के,
हम दर्पण से जुड़े रहे।।

जिन्हें चाहिए सब कुछ पल में,
चलो गुरुवर के चरण चले।
वसुनन्दी है मेरे गुरुवर,
जहाँ भक्त के भाग्य जगे।।

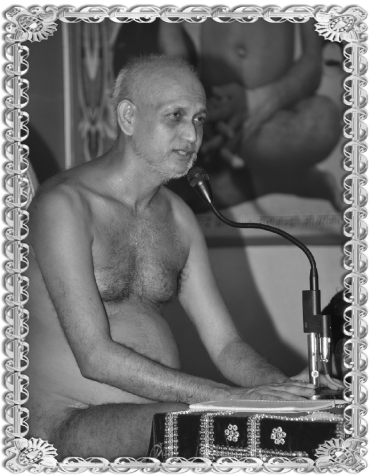

सौम्यता की प्रतिमूर्ति

मौन साधक गहरा चिन्तन,
जग में जिनकी पहचान है।
परमेष्ठी में मेरे गुरु का,
बीचों बीच में नाम है।।

जिस लक्ष्य में लगन लगी हो,
निष्ठा के साथ हुआ पूरा।
आप प्रतीक हो जिन शासन के,
काम हुआ न कोई अधूरा।।

निराभिमान हो, सरल सहज हो,
इस युग के हो संत महान।
सिद्धों की श्रेणी में आना,
जिनको पहले लक्ष्य प्रधान।।

कर्मयोगी हो कर्मकाण्ड में
सदा प्रंशसा पात्र बने।
परहितकारी गूढ़ तत्त्व हो,
शुभ योगों की गात्र बने।।

स्मरण शक्ति अद्भुत देखी,
साहित्य कला में प्रेम अपार।
उन्नायक हो जिन शासन के,
संस्कृति के शिरोधार।।

मिलन सार हो परोपकारी,
व्यस्त रहे हो जीवन भर।
सतत साधना करते रहते,
व्यर्थ न करते एक भी पल।।

समता में क्षमता को खोजा,
सरल-मृदु के भाषी हो।
चरम सीमा तक त्याग बढ़ाया,
फिर भी तप अभ्यासी हो।।

प्रसन्नता है गुरु चेहरे पर,
यह शिष्य भाग्य का तारा है।
जो चमक दिखी है गुरु मुद्रा में,
ये ही तो पुण्य सितारा है।।

विविध कलाएँ भरी आप में,
प्रगति पथ पर बढ़ो सदा।
यह यही कामना करते हैं,
जयवन्त गुरुवर रहे सदा।।

अक्षर शिल्पी गुरु आप हो

शिल्पी हो या शिल्पकार तुम,
दोनों का संगम गहरा है।
इक भाषा है एक कला है,
सूरत-सीरत का चहरा है।।

शब्द-शब्द के शिल्पकार हो,
अमिट छाप में दस्तावेज।
"स्वर्णोदय जयन्ति" मना रहे हैं,
ऐसा गुरुवर का है तेज।।

तुम सगज सृजेता कहलाये हो,
तुम धर्म ध्यान की रीति हो।
प्रोत्साहन में जगत गुरु हो,
बस आप गुणों की नीति हो।।

प्रयासों से सदा जीतते,
बस मन को संयम बना लिया।
क्या खोया क्या पाया अब तक,
तुमने जग को दिखा दिया।।

हस्ताक्षर हो आप समय के,
सूझबूझ में नीतिवान।
अक्षर शिल्पी गुरु आप हो,
कठिन मार्ग के साधक जान।।

वर्ष पचास हुए हैं पूरे,
अब सौ तक की बारी है।
अभी मना रह स्वर्ण जयन्ति,
फिर शताब्दी की तैयारी है।।

हम इतिहास लिखेंगे गुरुवर,
हमें पद चिन्हों पर चलना है।
कार्य कुशलता और सजगता,
बस इनमें सदा सम्हलना है।।

हम विश्वास करेंगे गुरुवर
जब तक गंगा में पानी है।
हम विस्मृत न कर पायेंगे,
वो गुरुवर की कहानी है।।

साहित्यकार भी लिखते रहें,
जब तक सूरज-चाँद रहेंगे।
वरदान हमें भी देना गुरुवर,
हम भी आपके संग चलेंगे।।

हस्ताक्षर